MPHIN/2021/83938

दैनिक पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 355 | ग्वालियर,21 अक्टुबर शनिवार 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

गाजा के मुख्य अस्पताल में केवल अगले 24 घंटों तक बिजली रहेगी : एमएसएफ

गाजा। डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (एमएसएफ) ने कहा कि गाजा के मुख्य अस्पताल, अल-शिफा में बिजली जनरेटर के लिए ईंधन का भंडार अधिकतम 24 घंटे तक ही रहेगा।

गुरुवार को एक समाचार रिपोर्ट में, एमएसएफ ने कहा कि बिजली के बिना कई मरीज मर जाएंगे। मधुमेह और कैंसर जैसी बीमारियों वाले मरीज और गर्भवती महिलाएं भी दवाओं की सामान्य कमी के कारण खतरे में हैं। गाजा स्थित फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के अनुसार, 7 अक्टूबर को हमास-इजराइल संघर्ष शुरू होने के बाद से शुक्रवार तक एन्क्लेव में कम से कम 1,524 बच्चों सहित 3,785 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 12,500 से अधिक अन्य घायल हुए हैं। एमएसएफ रिपोर्ट में कहा गया है कि गाजा पट्टी में हर दिन 800 से 1,000 लोग घायल होते हैं, लेकिन इस आंकड़े में केवल वे लोग शामिल हैं जो अस्पताल पहुंच पाए हैं। इसमें कहा गया है, चूंकि ईंधन की कमी के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच बेहद खतरनाक और जटिल है, केवल सबसे गंभीर रूप से बीमार या घायल मरीज का ही अस्पताल में इलाज हो सकता है। अल शिफ़ा अस्पताल गाजा के उन कुछ स्थानों में से एक है जहां बिजली बची हुई है, और यह वर्तमान में मंगलवार को अल अलही बैपटिस्ट अस्पताल में हुए विस्फोट के पीड़ितों का इलाज भी कर रहा है। समाचार रिपोर्ट में फिलिस्तीन के लिए एमएसएफ के चिकित्सा समन्वयक गुइलेमेट थॉमस के हवाले से कहा गया है कि हजारों फिलिस्तीनी भी अल-शिफा अस्पताल में शरण लिए हुए हैं। थॉमस ने कहा, मेरा मानना है कि इन लोगों को अगले कुछ घंटों में मरने का गंभीर खतरा है, क्योंकि चिकित्सा सहायता प्राप्त करना असंभव हो रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि आज गाजा में 60 प्रतिशत लोग पानी या स्वास्थ्य देखभाल के बिना बाहर रह रहे हैं। कोई बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध नहीं है। स्वच्छता की स्थिति बहुत खराब है। गंभीर चोटों के अलावा, खराब स्थिति से जुड़ी बीमारियों की एक लहर भी हैं- डायरिया, श्वसन और त्वचा संक्रमण और निर्जलीकरण जैसी बीमारियां तेजी से विकसित हो रही हैं और महिलाओं और बच्चों सहित सबसे कमजोर लोगों को गंभीर रूप से खतरे में डाल रही हैं। एमएसएफ ने कहा, गाजा में आधे लोग 18 साल से कम उम्र के हैं। फिर भी उनकी देखभाल के लिए कोई स्वास्थ्य प्रणाली नहीं बची है। गैर-लाभकारी संस्था ने कहा कि अस्पतालों को फिर से चालू करना महत्वपूर्ण है और अस्पतालों में ईंधन और दवा लाने के लिए नियमित युद्धविराम की गारंटी दी जानी चाहिए।

दिल्ली में स्कूल के पास अज्ञात महिला का मिला शव

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली में एक स्कूल के पास एक अज्ञात महिला मृत पाई गई, एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने शुक्रवार को कहा कि यह हत्या का मामला प्रतीत होता है। अधिकारी के अनुसार, इलाके में एमसीडी स्कूल की दीवार के पास एक शव पड़ा होने के संबंध में तिलक मार्ग पुलिस स्टेशन में एक कॉल प्राप्त हुई थी। मौके पर पहुंचने पर पता चला कि वह महिला का शव है। उन्होंने कहा, शुरुआती परिस्थितियों से यह हत्या का मामला लग रहा है, इसलिए फॉरेंसिक और क्राइम टीमों को मौके पर बुलाया गया। जांच से जुड़े अधिकारी ने कहा, मौत की परिस्थितियों को समझने में मदद के लिए डीडीयू अस्पताल के डॉक्टरों को भी मौके पर बुलाया गया। अधिकारी ने कहा, स्थापित प्रक्रिया के अनुसार कार्यवाही जारी है और उपलब्ध जानकारी के आधार पर कानूनी कार्रवाई शुरू की जा रही है।

पहले मांग कर पिया पानी, फिर हथियार के बल पर लूट लिए लाखों रुपए

हाजीपुर। बिहार के वैशाली जिले के बिदुपुर थाना क्षेत्र में

शुक्रवार को एक फाइनेंस कंपनी के कार्यालय में धावा बोलकर वहां रखे रुपए लूटकर लुटेरे फरार हो गए। लूटपाट की पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। अब पुलिस लुटेरों को पहचानने में जुटी है। पुलिस के मुताबिक, बिदुपुर थाना क्षेत्र के शांति मार्केट स्थित एक फाइनेंस कंपनी में एक मोटर साइकिल पर सवार होकर तीन लोग ग्राहक के रूप में पहुंचे। बताया जाता है कि इस दौरान एक व्यक्ति ने पीने के लिए पानी मांगा। एक कर्मचारी ने पीने के लिए पानी दिया। इसके बाद तीनों अपराधियों ने हथियार निकाल लिए और वहां रखे रुपए लूटकर फरार हो गए। पुलिस अधीक्षक रवि रंजन ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के तत्काल बाद पुलिस घटना स्थल पर पहुंच गई। करीब चार लाख रुपए की बात सामने आई है। उन्होंने बताया कि सीसीटीवी के फुटेज से अपराधियों को चिन्हित कर लिया गया है तथा उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

बीजेपी के लिए गेम चेंजर साबित होगा उत्तराखंड

नई दिल्ली। चुनावी बिगुल फूंक दिया गया है... देशभर की तमाम राजनीतिक पार्टियां राजतिलक की होड़ में है. दरअसल हाल ही में निर्वाचन आयोग ने इस साल होने वाले पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया है, जिसके बाद से राजनीतिक गलियारों में सरगर्मियां रफ्तार पकड़ रही है. देश की तमाम राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पार्टियां इस चुनाव में अपनी ऐतिहासिक जीत का दावा ठोक रही है, जिसे लेकर नेता-कार्यकर्ता एढ़ी चोटी का दम लगा रहे हैं। हालांकि इसी बीच एक इनसाइड खबर मिली है; दरअसल मालूम चला है कि साल के अंतिम में होने वाले मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ के चुनावों में उत्तराखंड गेम चेंजर साबित हो सकता है. ये दावा न सिर्फ राजनीतिक तौर पर, बल्कि प्रशासनिक तौर पर भी किया जा रहा है. चलिए जानते हैं कैसे।

दरअसल देश की दिग्गत पार्टियां, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में अपने चुनावी प्रचार के लिए उत्तराखंड के तमाम कद्दवार नेताओं को चुनावी रण में प्रचार के लिए भेज रही है. खासतौर पर देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी भाजपा की बात करें तो,

खुद प्रधानमंत्री मोदी के लोगों के नाम एक खास चिट्ठी लिखी थी, जिसमें उन्होंने राज्य में दोबारा डबल इंजन की सरकार बनने को लेकर विश्वास जताया था. वहीं पार्टी का आलाकमान भी पीएम मोदी के इस विश्वास को हकीकत में तबदील करने की जुगत में जुटा है, जिसके लिए उत्तराखंड से कई कद्दवार नेताओं को मध्य प्रदेश में चुनावी प्रचार की जिम्मेदारी सौंपी गई है. इनमें सीएम पुष्कर सिंह धामी समेत कई कैबिनेट मंत्रियों का नाम भी शामिल है, जो राज्य में जाकर सरकार की तमाम कल्याणकारी योजनाओं का दम भरते नजर आएंगे. वहीं अगर बात छत्तीसगढ़ की हो, तो भाजपा आलाकमान द्वारा जारी तमाम स्टार प्रचारकों की सूची में उत्तराखंड से सिर्फ कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज का नाम शामिल किया गया है. दरअसल राज्य में कई इलाकों में उनके मजबूत प्रभाव और काफी फालोअर्स के मद्देनजर पार्टी द्वारा ये फैसला लिया गया है. गौरतलब है कि, इन दोनों चुनावी राज्य में प्रशानिक तौर पर भी उत्तराखंड की महत्वपूर्ण भूमिका नजर आएगी. दरअसल दोनों राज्यों के विधानसभा चुनाव के मद्देनजर उत्तराखंड से कई आईएएस अधिकारी बतौर पर्यवेक्षक शामिल किए जाएंगे.

किडनी मरीजों को योगी सरकार का तोहफा

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने किडनी के मरीजों को तोहफा दिया है. दरअसल, यूपी सरकार प्रदेश के तीन शहरों में डायलिसिस यूनिट खोलने जा रही है. जिसके लिए वित्तीय सहायता भी स्वीकृत कर ली गई है. इसके साथ ही इन तीन जिलों में ब्लड बैंक भी खोली जाएगी. राज्य के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के निर्देश पर सूबे के 11 अस्पतालों के लिए वित्तीय स्वीकृत मिल गई है. इन पैसों से राजधानी लखनऊ, वारामसी और गोरखपुर के अस्पतालों में किडनी के मरीजों के लिए डायलिसिस यूनिट खोजी जाएंगी. उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि ये काम तय समय तक पूरे कर लिए जाएं. उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि सरकारी अस्पतालों को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जा रहा है. उन्होंने लखनऊ के लोक बंधु राज नारायण अस्पताल में चार-चार बेड की दो डायलिसिस यूनिट खोलने के निर्देश दिए हैं. इसके अलावा अस्पताल में ब्लड बैंक के लिए रोटरी इंटरनेशनल को भी अनुमति प्रदान की है. वहीं वाराणसी और गोरखपुर में चार-चार बेड की डायलिसिस यूनिट खोलने की मंजूरी दी गई है.

इन दोनों अस्पतालों में भी रोटरी इंटरनेशनल ब्लड बैंक की स्थापना की जाएगी. जिससे मरीजों को जरूरत पड़ने पर इन्हीं ब्लड बैंक से खून उपलब्ध कराया जा सके. वहीं राजधानी लखनऊ के उच्च न्यायालय इलाहाबाद खण्डपीठ की पैथोलॉजी को भी अपग्रेड करने का काम चल रहा है. इसमें ऑटोमेटिक बायोकैमेस्ट्री एनालाइजर मशीन लगाने के निर्देश दिए गए हैं. जबकि कानपुर के यूएचएम (उर्सला) अस्पताल में दो लिफ्ट लगाने की मंजूरी सरकारी की ओर से दी गई है. इसके अलावा योगी सरकार ने आगरा मानसिक आरोग्यशाला को भी तोहफा दिया है. योगी सरकार ने आगरा स्थित मानसिक आरोग्यशाला को 327.41 लाख रुपये का अनुदान देने का निर्णय लिया है. वहीं उरई-जालौन के जिला पुरुष चिकित्सालय को भी आधुनिक उपकरणों से लैस करने का फैसला लिया गया है. उधर बस्ती के जिला महिला चिकित्सालय को 44.08 और बलरामपुर के मेमोरियल जिला चिकित्सालय को उपकरण और फर्नीचर के लिए दो करोड़,11 लाख, 99 हजार, 466 रुपये की वित्तीय मदद दी गई गई है. वहीं झांसी के महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज के प्रशासनिक भवन में फायर फाइटिंग सिस्टम और फायर एलार्म की स्थापना के लिए योगी सरकार की ओर से 208.21 लाख की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गई है.

दिल्ली–मेरठ एक्सप्रेसवे पर ट्रक में लगी आग

मेरठ। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर शुक्रवार सुबह एक केमिकल से भरे ट्रक में भीषण आग लग गई। ड्राइवर और क्लीनर ने ट्रक से कूदकर अपनी जान बचाई और इसकी सूचना लोकल पुलिस और फायर विभाग को दी। मौके पर पहुंची फायर विभाग की दो गाड़ियों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। गनीमत रही कि जानमाल का कोई नुकसान नहीं हुआ। फायर विभाग से मिली जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार को तड़के करीब 6 बजे दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर काशी टोल प्लाजा के पास दिल्ली से मेरठ आते समय रोड पर चलती ट्रक के पिछले टायर में घर्षण के कारण आग लग गई। आग लगते ही पूरे ट्रक में फैल गई। ट्रक के पिछले हिस्से में रखे केमिकल में आग पहुंच गई थी।

अखिलेश यादव बोले, भाजपा फिर सत्ता में आई तो छिन जाएगा वोट देने का अधिकार

शाहजहांपुर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शुक्रवार को शाहजहांपुर में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि भाजपा दोबारा सत्ता में आई तो हो सकता है हमारे वोट का अधिकार भी छीन ले। यदि यह अधिकार छिन गया तो क्या हम बदलाव ला पाएंगे। इसीलिए, हमारे सामने बड़ी चुनौती है, लंबी लड़ाई है। अखिलेश यादव ने कहा कि पिछले चुनाव में भीड़ देखकर लगा कि सब सीटें जीत जायेंगे। मगर परिणाम आया तो जिले में हमारा खाता भी नहीं खुला। दरअसल, आपने तो जिताया मगर अधिकारियों ने हरा दिया। बेसहारा पशुओं के मुद्दे पर अखिलेश ने कहा कि लखनऊ से यहां तक आए, डिवाइडर पर सांड दिखते रहे। पता नहीं भाजपा वालों को इनसे कितना प्रेम है। आज जो बिजली मिल रही है वो नेताजी की देन है। यहां आते ही रोजा प्लांट की ऊंची चिमनी दिखी, यह भी नेताजी की देन है। नेताजी ने कोटाघाट पुल बनवाया, भाजपा वाले उसकी मरम्मत भी नहीं करा पा रहे हैं। अब जो एक्सप्रेसवे बन रहा है वो दूरी बढ़ा रहा है। हमने सदन में सवाल उठाया तो अलाएमेंट बदला। तब सीएम ने कहा था कि धन ले गए खन्ना।

बिहार में ट्रेन से कटकर महिला और 2 बच्चों की मौत

आरा। बिहार के भोजपुर जिले के चरपोखरी थाना क्षेत्र के आरा-सासाराम रेल खंड पर शुक्रवार को तेज रफ्तार ट्रेन की चपेट में आने से महिला और दो बच्चों की मौत हो गई। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। पुलिस के मुताबिक, सेमरांव रेलवे क्रॉसिंग के समीप पटना-सासाराम इंटरसिटी एक्सप्रेस ट्रेन से कटकर दो मासूम बच्चों समेत एक महिला की मौत हो गई। मृतकों की पहचान दुलौर टोला निवासी पिंटू सिंह की पत्नी गुड़िया देवी (26) और उसके पुत्र प्रियांशु और कल्लू के रूप में की गई है।

चरपोखरी के थाना प्रभारी संजय कुमार सिन्हा ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर शवों को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया। मृतक के मायके वालों का आरोप है कि तीनों की हत्या कर शव को रेलवे ट्रैक पर फेंक दिया गया है। पुलिस का कहना है कि प्रथम दृष्ट्या ट्रेन से कटकर मौत का मामला प्रतीत हो रहा है। पुलिस पूरे मामले की विभिन्न कोणों से जांच कर रही है।

तेलंगाना की संपत्ति एक परिवार के हाथ में: राहुल गांधी

जगतियाल (तेलंगाना)। मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव पर हमला तेज करते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि एक परिवार तेलंगाना

पर शासन कर रहा है और राज्य की पूरी संपत्ति उसके हाथों में केंद्रित है। उन्होंने अगले महीने होने वाले विधानसभा चुनाव को दोराला तेलंगाना और प्रजाला तेलंगाना (सामंतों का तेलंगाना और लोगों का तेलंगाना) के बीच लड़ाई करार दिया और लोगों से उस सपने को साकार करने के लिए कांग्रेस को सत्ता में लाने का आग्रह किया, जिसके लिए उन्होंने तेलंगाना राज्य के लिए लड़ाई लड़ी थी। पूर्व कांग्रेस प्रमुख तेलंगाना में विजयभेरी यात्रा के तीसरे दिन जगतियाल में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित कर रहे थे। यह दोहराते हुए कि अगर कांग्रेस सत्ता में आई तो तेलंगाना में जाति जनगणना कराएगी, कांग्रेस सांसद ने कहा कि यह लोगों के तेलंगाना के सपने को साकार करने की दिशा में पहला कदम होगा।

नमो भारत ट्रेन के उद्घाटन अवसर पर क्या बोले पीएम

नई दिल्ली। पीएम नरेंद्र मोदी ने दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर के प्राथमिकता वाले खंड का उद्घाटन किया. प्रधानमंत्री ने दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर का निरीक्षण किया. उन्होंने साहिबाबाद से दुहाई डिपो तक जाने वाली रैपिडएक्स ट्रेन-

'नमो भारत' को हरी झंडी दिखाई. इस दौरान सीएम योगी आदित्यनाथ ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि देश की पहली रैपिड रेल नमो भारत विजयदशमी के पूर्व बहुत बड़ा उपहार है. उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी की अगुवाई में बीते साढ़े नौ साल के अंदर इस देश ने वर्ल्ड इंफ्रास्ट्रक्चर को देखा है. एयरपोर्ट के तर्ज पर रेलवे स्टेशन भी बनाए जा रहे हैं.

1. आज पूरे देश के लिए ये ऐतिहासिक क्षण

पीएम ने कहा कि आज पूरे देश के लिए ये ऐतिहासिक क्षण है. आज देश में पहली रैपिडएक्स ट्रेन आरंभ हुई है. उन्होंने कहा, जिसका हम शिलान्यास करते हैं, उसका उद्घाटन भी हम करते हैं. इस परियोजना में मेरठ का भाग एक-डेढ़ साल के बाद पूरा हो जाएगा. उस समय भी मैं आपकी सेवा में मौजूद रहने वाला हूं.

2. आधुनिकता के साथ गति भीः पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 'नमो भारत ट्रेन में आधुनिकता के साथ गति भी है. इसकी रफ्तार अद्भुत है. यह नमो भारत ट्रेन नए भारत के नए सफर और नए संकल्पों को परिभाषित करेगी.'

3. दुनिया में आज का हिंदुस्तान छाया- मोदी

पीएम मोदी ने कहा, 'दुनियाभर में आज हिंदुस्तान छाया हुआ है. आज का भारत अपने दम पर 5जी को लांच करने में सक्षम है. उसे देश के हर कोने में ले जाता है. भारत आज विश्व में सबसे अधिक डिजिटल लेनदेन कर रहा है.

4. छोटे-छोटे सपने देखने की आदत नहीं

पीएम ने कहा, मुझे छोटे-छोटे सपने देखने की आदत नहीं है और न ही मरते-मरते चलना चाहता हूं. मैं देश की युवा पीढ़ी को यह विश्वास दिलाना चाहूंगा कि आने वाले दशकों में आप किसी भी देश से भारत की ट्रेन को पीछे नहीं देखेंगे.

5. नमो भारत रेल भविष्य के भारत की झलक हैः पीएम मोदी

पीएम मोदी ने कहा, हम हेलिकॉप्टर में यात्रा करते हैं. उसके अंदर अंदर आवाज आती है. जैसे कोई हवाई ट्रैक्टर हो. ट्रैक्टर से भी अधिक आवाज उसमें आती है. ऐसे में कान को बंद रखना पड़ता है. वहीं नमो भारत रेल में हवाई जहाज से भी कम आवाज सुनाई देती है. इसकी यात्रा बेहद सुखद है. नमो भारत रेल देश के भविष्य की झलक है.

6. मेरा बचपन रेलवे प्लेटफार्म पर बीता

पीएम ने कहा कि मुझे इस आधुनिक ट्रेन से यात्रा का अनुभव प्राप्त हुआ है. मेरा बचपन रेलवे प्लेटफार्म पर बीता है. आज रेलवे का ये नया रूप मुझे सबसे अधिक खुशी देता है.

7. मां कात्यायनी का आशीर्वाद प्राप्त- पीएम मोदी

हमारे यहां नवरात्रि में शुभ कार्य करने की परंपरा रही है. देश की पहली नमो भारत ट्रेन को मां कात्यायनी का आशीर्वाद प्राप्त है. इस नई ट्रेन में ड्राइवर से लेकर सभी कर्मचारी महिलाएं है. ये देश में नारीशक्ति के बढ़ते कदमों का प्रतीक है.

8. आर्थिक ताकत बनने पर देश की तस्वीर बदलती हैः पीएम मोदी आज जो तेज रफ्तार नमो भारत से आरंभ हुई है. ये मेड इन इंडिया है, भारत की अपनी ट्रेन है. अभी प्लेटफार्म पर स्क्रीन डोर के सिस्टम का लोकार्पण हुआ है. ये भी मेड इन इंडिया है. नमो भारत में भारत के भविष्य की झलक है. नमो भारत इस बात के सबूत है कि देश की आर्थिक ताकत बढ़ती जा रही है.

9. एशियम गेम्स में भारत का शानदार प्रदर्शन- पीएम

पीएम ने कहा कि एशियन गेम्स में 100 से ज्यादा पदक जीतकर भारत ने इतिहास रच दिया है. आज का भारत अपने दम पर 5ज लॉन्च करने की क्षमता रखता है. इस देश के कोने-कोने में ले जाता है.आज का भारत सबसे तेज डिजिटल लेन-देन करता है.

10. प्रदेश ही नहीं देश भी लगातार तरक्की कर रहा

रैपिड रेल के पहले फेज का उद्घाटन करने पर यूपी के सीएम ने पीएम का विशेष आभार व्यक्त किया है. उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश ही नहीं देश भी लगातार तरक्की कर रहा है।

अब गाजा में चर्च पर हमला, शरण लिए आठ लोगों की मौत, कई घायल

नई दिल्ली। गाजा के क्षेत्र में लगातार इजरायली हमले जारी हैं. गाजा पट्टी पर 19 अक्टूबर (गुरुवार) को हवाई हमले किए गए. ये वो क्षेत्र है, जहां फिलिस्तीन के नागरिकों को शरण लेने को कहा गया था. ये धमाका गाजा शहर में मौजूद ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च में हुआ. मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, जिस चर्च पर यह हमला हुआ, वो गाजा के अल-ज़ायटौन क्षेत्र में स्थित है. इसका नाम सेंट पोर्फिरियस बताया गया है. मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च में मरने वालों की तादात बढ़कर आठ हो चुकी है. वहीं दर्जनों लोग घायल हो चुके हैं. हमले में मारे गए लोगों में महिलाएं और बच्चे भी हैं. कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए. मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, हमले में चर्च के मैनेजमेंट ऑफिस की इमारत पूरी तरह से गिर गई है. इसमें कई फिलिस्तीनी परिवारों ने शरण ली थी.

इनमें ईसाई और मुस्लिम दोनों धर्मों के परिवार थे. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इस घटना से जुड़ा एक वीडियो सामने आया है. इस वीडियों में घायलों को गाजा के अस्पताल ले जाते दिखाया गया है.

चर्च पर हमले को लेकर फिलिस्तीन के उग्रवादी संगठन हमास की ओर से एक बड़ा बयान जारी किया गया है. इसमें इजरायल पर बड़ा आरोप लगाया गया है. हमास के अनुसार, गाजा में मौजूद चर्च पर इजरायल एयर ?ोर्स ने बम गिराया. यह बमबारी धार्मिक स्थानों में शरण लिए नागरिकों पर की गई. यह एक और अपराध है. हमास का कहना है कि इससे पहले यहां के एक अस्पताल पर भी हमला किया गया. अब एक प्राचीन चर्च सेंट पोर्फिरियस को निशाना बनाया गया है. संगठन के अनुसार, इजरायली हमले के बाद चर्च में शरण लेने वाले कई ईसाई हताहत हुए हैं. इसके साथ चर्च कई बड़े भागों को भारी नुकसान हुआ है. हमास की मांग है कि इस घटना को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय निंदा करे. पूजा के स्थलों पर शरण लेने वाले नागरिकों के खिलाफ हमले फासीवादी आक्रामकता है. इसे रोका जाना चाहिए. इस बीच हमले को लेकर इजरायल की ओर से कोई बयान सामने नहीं आया है. गाजा के सेंट पोर्फिरियस चर्च का बड़ा इतिहास रहा है. इसका निर्माण 1150 और 1160 के दशक के बीच क्रुसेडर्स ने कराया था. इसका नाम गाजा के 5वीं शताब्दी के बिशप के नाम पर रखा गया. एक मीडिया रिपोर्ट की मानें तो इजरायल ने जब गाजा पर हमला करना आरंभ किया था तब चर्च के पादरी फादर एलियास ने यहां पर अटैक की आशंका जताई थी. उन्होंने कहा था कि जल्द इजरायल चर्च को निशाना बना सकता है. उस समय उन्होंने कहा था कि यह एक घृणित कार्य होगा, बल्कि मानवता पर भी हमला होगा.

नेशनल मिशन फॉर ओल्ड पेंशन स्कीम भारत के चण्डीगढ़ चैप्टर का हुआ गठन

मानवाधिकार दिवस 10 दिसंबर को दिल्ली मै करेगें प्रदर्शन

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी - पुरानी पेंशन बहाली के लिए ऑल इंडिया एन.पी.एस. एम्प्लॉयज फेडरेशन द्वारा पूरे भारत में चलाए जा रहे आंदोलन ÷नेशनल मिशन फॉर ओल्ड पेंशन स्कीम भारत÷ के आज चंडीगढ़ चैप्टर का पीजीआई में गठन किया गया। फेडरेशन के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी जनक सिंह रावत ने बताया कि चंडीग? मै हुई बैठक मै फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. मंजीत सिंह पटेल द्वारा राष्ट्रीय महासचिव सुधीर रूपजी और राष्ट्रीय संचालन समिति सदस्य मनीष प्रजापति की उपस्थिति में चंडीगढ़ चैप्टर की अध्यक्ष के रूप में मजनीक कौर और कन्वेनर के रूप में सत्यवीर डागुर को जिम्मेदारी सौंपी। मजनीक कौर वर्तमान में पीजीआई चंडीगढ़ की नर्सेज यूनियन की अध्यक्ष हैं जबकि सत्यवीर डागुर पीडब्ल्यूडी एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं। चंडीगढ़ चैप्टर के महासचिव की जिम्मेदारी राम सेवक, जो ओटी टेक्निकल स्टाफ एसोसिएशन के सहसचिव हैं, को सौंपी गई। चैप्टर अपने बाकी पदाधिकारियों की सूची 15 दिनों के भीतर चयन करके राष्ट्रीय कार्यकारिणी को सौंपेगा। रावत ने बताया कि पुरानी पेंशन बहाली के लिए केंद्र और केंद्र शासित प्रदेशों के कर्मचारी पूरी तरह से लामबंद हो रहे हैं और आने वाले 10 दिसंबर को राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर डा. मंजीत सिंह पटेल के नेतृत्व में पुरानी पेंशन बहाली के लिए दिल्ली कूच करेंगे। दिल्ली की इस ÷पेंशन जयघोष रैली÷ में चंडीगढ़ से हजारों की तादाद में कर्मचारी दिल्ली पहुंचेंगे। मीटिंग में विजय कुमार, राजेश कुमार जीएमसीएच 32 की नर्सेज एसोसिशन से और श्याम सुंदर, श्याम सागर नर्सिंग ऑफिसर और सतीश गुर्जर, लोकेश पराशर आदि सदस्य के तौर पर मौजूद रहे।

आज से पिछोर एसडीएम कार्यालय में जमा होंगे नाम निर्देशन पत्र

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पिछोर ।विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र 26 पिछोर में 20 अक्टूबरशुक्रवार को राजनैतिक दलों के ब्लॉक तथा मंडल प्रमुखों की एक आवश्यक बैठक एसडीएम कार्यालय में अनुविभागीय दंडाधिकारी एवं निर्वाचन रिटर्निंग अधिकारी राजीव समाधिया द्वारा की गई ।बैठक में निर्वाचन सहायक रिटर्निंग अधिकारी एसएस गुर्जर, नायब तहसीलदार निशीकांत जैन, मास्टर ट्रेनर तथा स्वीप प्रभारी डॉ.अरविंद यादव, निर्वाचन सुपरवाइजर हरिदास त्रिपाठी सहित राजनीतिक दलों से मोहम्मद सलीम खान ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष खनियाधाना, डीएस चौहान आमआदमीपार्टी विधानसभा प्रमुख जितेंद्र देलवार विधानसभा प्रमुख बसपा सहित आदि उपस्थित थे। निर्वाचन रिटर्निंग अधिकारी समाधिया द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि 21अक्टूबर को प्रातः 11ः00 बजे से

सायंकाल 3ः00 बजे तक नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने का कार्य शुरू हो जाएगा।नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर है नामांकन पत्र के साथ शपथ पत्र पूरा भरा होना चाहिए इसके साथ ही 200 मीटर के अंदर कोई भी तीन वाहन से अंदर प्रवेश नहीं करेगा।तथा फोटो सफेद या लाइट होना चाहिए।अवकाश दिवस में नामांकन पत्र नही भरे जायेंगे इसके साथ ही सभी प्रत्याशियों को अपना एक नया बैंक खाता खुलवाना होगा जो राष्ट्रीयकृत बैंक का होना चाहिए।

आरओ कक्ष में प्रत्याशी सहित पांच व्यक्तियों को ही मिलेगा प्रवेश-नामांकन भरते समय अभ्यर्थी अपने साथ प्रस्ताव सहित केवल चार समर्थकों को ही ला सकते हैं ,अर्थात अभ्यर्थी सहित कुल पांच व्यक्तियों को ही नामांकन भरते समय आरओ के कक्ष में प्रवेश दिया जा सकेगा।

प्रति वर्ष अनुसार इस वर्ष भी मां का दरबार श्री आदर्श नवदुर्गा शीतला माता मंदिर समिति मधुसूदनगढ़ द्वारा सजाया गया है।

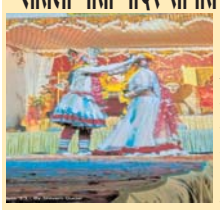

रिपोर्टर -प्रतीश अग्रवाल
पुष्पांजलि टुडे

मधुसुदनगढ़।प्रति वर्ष अनुसार इस वर्ष भी मां का दरबार श्री आदर्श नवदुर्गा शीतला माता मंदिर समिति मधुसूदनगढ़ द्वारा सजाया गया है। जबलपुर से आए कलाकारों द्वारा आज भगवान श्री कृष्ण जी के भजनों पर अपनी प्रस्तुति दी एवं मुख्य अतिथि के रूप में चाचौड़ा विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी लक्ष्मण सिंह भी मौजूद रहे। और प्रस्तुतियों का आनंद लिया साथ ही साथ कलाकारो का उत्साह वर्धन भी किया। नवरात्रों के शेष दिनो मे भी बाहर से आये कलाकारो द्वारा अनेक प्रस्तुतियां देखने को मिलेंगी।

नगर परिषद रन्नौद में आर एस एस ने निकाला पथ संचलन

संवाददाता प्रदीप जैन (पिंटू) रन्नौद

नगर में अनेक स्थानों पर फूल बरसाकर पथ संचलन का स्वागत किया गया।जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में मार्गदर्शन सह विभाग कार्यवाह जी का मिला खंड संचालक राकेश श्रीवास्तव जी,खंड कार्यवाह आशीष जी बोहरे उपस्थित रहे।

शिवपुरी पुलिस की अवैध शराब के खिलाफ कार्यवाही जारी

कोतवाली पुलिस द्वारा 6 पेटी देशी प्लेन मदिरा व 5 पेटी बीयर सहित आरोपी को किया गिरफ्तार

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री रघुवंश सिहं भदौरिया द्वारा आगामी विधानसभा चुनाव को दृष्टिगत रखते हुए अवैध शराब, अवैध हथियार, अवैध मादक पदार्थ के परिवहन एवं विक्रय को रोकन हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है जिसमें कार्यवाही हेतु पुलिस अधीक्षक शिवपुरी व्दारा समय समय पर थाना प्रभारियो को कार्यवाही करने हेतु आदेशित किया जाता है । जिसके पालन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री संजीव मूले एंव नगर पुलिस अधीक्षक श्री संजय चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में दिनांक 19.10.23 को थाना कोतवाली को ग्राम सिंहनिवास में एक व्यक्ति अपने घर के बाहर अवैध शराब विक्रय करने की फिराक में खड़ा है की सूचना

प्राप्त हुई । सूचना की तस्दीक पर से थाना कोतवाली व्दारा त्वरित कार्यवाही करते हुए कोतवाली टीआई विनय यादव व्दारा टीम बनायी जाकर ग्राम सिंहनिवास पर कार्यवाही करने पहुचे जहाँ एक व्यक्ति पुलिस को आता देख भागने लगा उक्त व्यक्ति को हमराही पुलिस की मदद से घेरकर पकडा तथा आरोपी के कब्जे से 6 पेटी देशी प्लेन मदिरा व 6 पेटी बीयर कुल कीमती करीबन 50 हजार रुपये की पकडी बाद आरोपी के विरुद्ध म.प्र. आबकारी अधीनियम के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया।

सराहनीय भूमिका -उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी थाना कोतवाली विनय यादव, उनि0 दीपक पलिया, उनि अभिन्यू राजावत, प्र0आर0 142 नरेश यादव, आर0 अजय यादव, आर0 भूपेन्द्र यादव, आर0 देवेन्द्र रावत, आर0 अजीत राजावत की विशेष भूमिका रही ।

पुलिस थाना देहात द्वारा गुना के जिला बदर व अन्य दो आदतन अपराधियों को कार में 16 पेटी अंग्रेजी शराब व 315 बोर कट्टा मय दो जिन्दा राउंड के साथ किया गिरफ्तार

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-आगामी विधानसभा चुनाव 2023 को मद्दे नजर रखते हुए पुलिस अधीक्षक शिवपुरी द्वारा चलाये जा रहे जुआ ,सट्टा , मादक पदार्थ ,अवैध हथियार व कच्ची शराब के अभियान के तहत अतरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण कुमार भूरिया एवं श्रीमान एसडीपीओ शिवपुरी संजय चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में दिनांक 20.10.2023 को मुखबिर सूचना व रात्री गस्त चैकिंग के दौरान एक सफेद रंग की एसेन्ट कार नम्बर स्ब्0 4च्त 2566 को रोका कार में बैठ सभी तीनों लगों को बाहर निकालकर चैक किया तीनों व्यक्तियों के नाम पते पूछे तो 1.अनुज पुत्र बाबूसिंह सिकारी उम्र19 साल नि. नाना खेडी पिपरौदा जिला गुना 2.सूरज बारार उर्फ सनी पुत्र रामसिंह बारार उम्र 20 साल नि. दुर्गा कालोंनी गुना 2.धर्मेन्द्र पुत्र बृजमोहन रजक उम्र 32 साल नि. ग्राम खजूरी थाना वदरवास शिवपुरी का होना बताया जिनकी तलाशी ली तो

सूरज बारार उर्फ सनी कमर मैं वायी तरफ पेन्ट के नीचे एक देशी 315 वोर का देशी कट्टा व दो 315 वोर के जिन्दा राउण्ड रखे मिला कीमत 3500 रूपये एवं कार की तलाशी ली तो डिग्गी व वीच बाली सीट पर कपडे के चादर से ढकी अलग अलग ब्रांड के अग्रेजी शराब की 16 पेटी जिनमें 50-50 क्वार्टर भरे हुये रखे मिले कीमत 88,000 रूपये मिली आऱोपी गणो का यह कृत्य धारा 34(2) आवकारी एक्ट एवं 25,27 आर्मस एक्ट के तहत दण्डनीय पाया जाने से मौके पर उक्त अंग्रेजी शराब की 16 पेटी एवं एक 315 वोर का देशी कट्टा दो 315 वोर के जिन्दा राउण्ड एवं एसेन्ट कार नम्बर स्ब्0 4च्त 2566 की कीमत 9,00,000 लाख रूपये कुल कीमत 9,91,500 रूपये आदि जप्त किया जाकर आरोपीगणों को गिरफ्तार किया जाकर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया ।

भूमिका - निरीक्षक विकास यादव थाना प्रभारी देहात, सउनि विनोद सिंह गुर्जर, प्रआर.570 विनय कुमार सिंह, प्रआर.374 गजेन्द्र सिंह परिहार,प्रआर.342 मोहन सिंह चौहान,प्रआर.380 धर्मेन्द्र सेंगर,प्रआर.499 देवेन्द्र सेन,प.आर.आशुतोष तिवारी,प्रआर.201 सुनील भार्गव, आर.998 प्रशांत जादौन,आर.683 मनोज कुमार, आर.650 सत्येन्द्र सिंह,आर.259 शरद यादव, की मुख्य भूमिका रही है ।

बसपा प्रत्याशी नवल सिंह धाकड़ ने किया कार्यालय का उद्घाटन

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- शिवपुरी के कोलारस तहसील से बसपा प्रत्याशी नवल सिंह धाकड़ ने आज अपने कार्यालय का उद्घाटन किया जिसमें सभी बसपा कार्यकर्ता और पदाधिकारी मौजूद रहे कार्यालय के उद्घाटन में बसपा प्रत्याशी नवल सिंह धाकड़ ने केनरा बैंक के सामने अब रोड पर अपने कार्यालय का उद्घाटन किया कार्यालय के उद्घाटन पर बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी नवल सिंह धाकड़ ने बताया की इस बार आने वाली विधानसभा में बसपा कोलारस से सीट निकलकर बहुजन समाज समाज के लोगों के हक और अधिकार के लिए लड़ती आई है और आगे भी लड़ती रहेगी नवल सिंह धाकड़ काफी समय से कोलारस क्षेत्र में एक्टिव है और पिछले 3 सालों से पूरे कोलारस क्षेत्र के गांव में लोगों से संपर्क कर रहे हैं जिसके कारण उन्हें कोलारस विधानसभा क्षेत्र के सभी समाजों का सहयोग और समर्थन मिल रहा है आने वाले समय में कहीं ना कहीं बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी नवल सिंह धाकड़ भारतीय जनता पार्टी के और कांग्रेस पार्टी की गणित बिगाड़ सकते हैं उनको मिल रहे समर्थन से बहुजन समाज पार्टी एक अलग ही परिभाषा लिखने के लिए कोलारस विधानसभा में जोर-जोर से प्रचार प्रसार में लगी हुई है

हमारा अतीत हमेशा ही गौरवशाली रहा है ओर इससे प्रेरणा लेनी चाहिए

विशाल भार्गव मध्य भारत प्रान्त भोपाल की योजना अनुशार तीन दिवसीय व्यक्तिव विकास शिविर दिशा वोध का आज समापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ

-दैनिक पुष्पांजली टुडे
संवाददाता जितेंद्र राय -

मिुंगावली वद्या भारती द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर उचतत्तर माध्यमिक विद्यालय मूंगावली में गत 18 अक्टूबर से प्रारंभ हुआ दिशा बोध शिविर तीन दिन का आज 20 तारीख को सांम समापन कार्यक्रम के साथ संपन्न हुआ जिसमे विद्यालय के लगभग 45 भैया बहिनों ने व्यक्तितव विकास के साथ साथ व्यवहारिक जीवन मे आने बाली सामान्य जानकारीओ के बारे में जाना योजना अनुशार यह शिविर प्रातः 8 बजे से लेकर सांम 5 बजे तक तीन दिवस तक चला जिसमे भैया बहिन 18 तारीख को प्रातः अपनी अपनी साइकलों से पास के ग्राम ढुरैर गए वहां जाकर भैया बहिनों ने मन्दिर के पास बने स्थान और साफ सफायी कर श्रम दान किया और आते समय थाना मुंगावली में कानून के बारे में सामान्य जानकारी थाना स्टाफ से प्राप्त की भैया बहिनों ने 18 तारीख को वहिं ग्राम में ही भोजन किया और सांम को वापस साइकल से विद्यालय आये19 तारीख को दूसरे दिन भैया बहिनों ने स्वयं अपने हाथों से चूल्हे पर लक?ियों को जलाकर भोजन बनाया और एक सभी ने उसी भोजन को प्राप्त किया तीसरे दिन 20 तारीख को भैया बहिनो ने जाते समय स्थानीय रेलवे स्टेशन पर जाकर साफ सफायी कर श्रम दान किया और भारतीय ट्रेनों के सम्बंध में स्टेशन मास्टर से जानकारी ली ओर अपने अपने अनुभव साझा किए समापन कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य विशाल भार्गव ने भारत के गौरव शाली इतिहास के बारे में भैया बहिनो को जानकारी दी कि किस तरह हमारे अतीत में हमने अपनी परंपराएं बिभिन्न अवरोध के बाद भी नही मिटने दीं हमने अपने संघर्षी जीवन सेली से सभी समस्याओं का डटकर सामना किया हमे अपने जीवन मे अपने अतीत से प्रेरणा लेकर ही आगे बढाना चाहिए इस तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर को दिसा बोध नाम दिया गया था इसमे कक्षा नवम ओर दसम के 45 भैया बहिनो ने सहभागिता की साथ मे शिविर के सयोंजक आचार्य राधेश्याम उपाध्याय , आचार्य चन्द्रेश असवरिया , विद्यालय की दीदी रविकान्ता तिवारी , सविता तोमर , ओर आचार्य योगेश रिछारिया , का भी शिविर की व्यवस्थाओ में सहयोग रहा उद्धघाटन सत्र में 18 तारीख को राष्टिय स्वयं सेवक संघ के नगर मूंगावली के विस्तारक संजय नागर द्वारा समर्पण और त्याग पर अपने विचार भैया बहिनों के मध्य रखे गए थे

जिला आयुष अधिकारी राजेंद्र अहिरवार द्वारा प्रार्थी को फर्जी प्रकरण में फसाये जाने का षड्यंत्र किया जा रहा

जिलाधिकारी आयुष द्वारा प्रार्थी को कई षडयंत्रों में फसाया

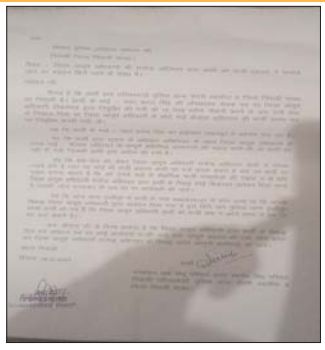

प्रार्थी पवन प्रताप सिंह औषधि सेवक पद पर जिला आयुष अधिकारी टीकमगढ़ द्वारा नियुक्त की गई थी 13 महीने नौकरी करने के बाद उन्हें सेवा से निकाल दिया था जिला आयुष अधिकारी के छोटे भाई कैलाश अहिरवार की फर्जी प्रमाण पत्र पर नियुक्ति कर दी गई थी यह की भाई पवन प्रताप सिंह हाईकोर्ट जबलपुर में प्रकरण चल रहा है जब सूचना अधिकार के अधिनियम के तहत जिला आयुष अधिकारी से उनके भाई कैलाश

अहिरवार के संपूर्ण शिक्षक दस्तावेज की नकल मांगी थी जो प्रार्थी को नहीं दी गई जिसकी प्रार्थी द्वारा अपील की गई है आपको बता दें इसी बात को लेकर जिला आयुष अधिकारी राजेंद्र अहिरवार प्रार्थी से रंजिश रखने लगे हैं तथा यह कोई भी फर्जी प्रकरण दर्ज करवा सकते हैं क्यों वह प्रार्थी पर दबाव बनाना चाहते हैं की उनके भाई फर्जी दस्तावेज की नकल ना लें यदि जिला आयुष अधिकारी राजन अहिरवार द्वारा प्रार्थी के विरुद्ध कोई शिकायत आवेदन दिया जाता है तो उसकी जांच कार्यवाही की जाए थाना पृथ्वीपुर से प्रार्थी के पास कई प्रकार के फोन आते हैं कि आपके द्वारा इस तरीके का आवेदन आया है आप थाना आ जाओ अगर कोई मेरे खिलाफ प्रकरण दर्ज होता है तो उसकी कार्यवाही जांच पड़ताल करके की जाए

मतदान के लिए प्रेरित करने स्कूल बच्चों को दिलाई शपथ

दैनिकपुष्पांजली टुडे
संवाददाता मालनपुर
पहलवान सिंह राजावत

मालनपुर/ विधानसभा निर्वाचन 2023 में अधिक से अधिक शत प्रतिशत मतदान करने के लिए शासन द्वारा मशीनरीयों लगी है परंतु मालनपुर क्षेत्र में प्राइवेट स्कूल की से एक निजी स्कूल संचालक दिनेश मतदान करने के लिए अपनी अनूठी सिंह परिहार उर्फ बंटू ने अपने पहल करने में पीछे नहीं है मालनपुर शिवाजी पब्लिक स्कूल में 700 बच्चों के लगभग सुबह प्रार्थना में सभी बच्चों को शपथ दिलाई एवं स्कूल स्टाफ को और कहा हम सभी बच्चे अपने-अपने माता-पिता परिजनों को साथ ही अपने पड़ोसियों को 17 नंबर माह को होने वाले चुनाव में जागरूकता से कड़ी में लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए सत प्रतिशत मतदान करें पहले हर मतदाता को मतदान करने की सलाह दी जाए बाद में आपने काम पर जाए पढ़ाई के साथ-साथ अपने परिजनों को बोट डालने के लिए कहें ज्ञात रहे कि शिवाजी पब्लिक स्कूल एक अनूठी पहल कर मतदान करने के संदेश दिया जो सराहनीय है इस शिक्षण संस्थाओं को देखकर अन्य शिक्षण संस्थान आगे आओ तो मतदान करने की हर मतदाता में जागृति आएगी इस शिक्षण संस्था के संचालक द्वारा अपने शिक्षण स्टाफ के साथ-साथ कुछ समाज सेवा भाव से करते रहते हैं चाहे गोवंश की दवाइयां का वितरण प्रतिदिन बच्चों द्वारा अपने घर से पहली रोटी गाय की अपनी इच्छा से घर से लाकर गायों के लिए एकत्रित गोवंश को खिलाने का काम किया जाता है प्रतिदिन इस प्रामाण में दिए जा चुके इस नेकर करने के लिए स्कूल शिक्षकों एवं संचालक की भुरि-भुरि प्रशंसा की जा रही है संचालक हारने काम में आगे जाकर हिस्सा लेते हैं

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं आपके सुख-दुख में हमेशा साथ खड़ा रहूंगा :डॉ अरविंद सिंह भदौरिया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । अटेर विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी डॉ अरविंद सिंह भदौरिया अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में पहुंचकर 17 नवंबर को होने जा चुनावी महासमर में भाजपा को जिताने एवं अटेर से भाजपा का कमल खिलाने के लिए सर्व समाज के मतदाताओं के बीच पहुंचकर जनसंपर्क से समर्थन मांगेंगे और जनता का आशीर्वाद ग्रहण किया।भाजपा प्रत्याशी डॉ अरविंद सिंह भदौरिया अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत, पीपरी सर्कल के लावन गोपालपुर , अमृतपुर खुर्द पिरोड़ा,अमल्हेडी ,सेमरपुरा ,सुजानपुर मैं जनसंपर्क करते हुए भाजपा को जीतने के लिए मतदाताओं से संपर्क से समर्थन मांगा।डॉ भदौरिया ने जनसंपर्क के दौरान नुक्कड़ सभाओं के माध्यम से कहा कि कांग्रेस ने अटेर विधानसभा क्षेत्र के साथ हमेशा तुष्टिकरण की राजनीति चल कर विकास की मुख्य धारा से दूर रखा मैंने अपने कार्यकाल में कनेरा उद्वान सिंचाई योजना को प्रारंभ करते हुए विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का काम किया इस यह योजना वर्षों से बंद पड़ी थी भारत सरकार ने एनओसी देने के बाद इस योजना को प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कैबिनेट में पास करते हुए योजना के निर्माण कार्य को आगउ बढ़ाया है इसके माध्यम से किसानों के सीधे खेतों में पानी पहुंचेगी मैंने क्षेत्र में बड़े-बड़े पुल सड़क एवं ग्राम पंचायत में विकास के अनेक ऐसे निर्माण कार्य किया जो जनता को सीधा लाभ देने का कार्य करता है मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकार ने अटेर क्षेत्र के विकास के लिए कोई आर्थिक कमी नहीं आने दी है मैं आपको विश्वास दिलाता हूं यह चुनाव अटेर क्षेत्र के विकास की दिशा और दशा को तय करेगा और आपने मुझे आशीर्वाद दिया सेवा करने का अवसर मिला तो क्षेत्र में ऐसे अनेक कार्य होंगे जो अटेर एक विकसित विधानसभा विकास की ओर आगे बढ़ेगा।

श्री आई माताजी मंदिर कलंबोली पर चढ़ाई धव्जा

दैनिक पुष्पाजंली टुडे / नारायणलाल सेंणचा

मुम्बई। समाज की आराध्य देवी मां आईजी के नवरात्रि के तीसरे दिन मंदिर की वर्ष गांठ पर सीरवी समाज कलंबोली,पनवेल और भामाशाह वालाराम मगाजी भायल परिवार जोजावर द्वारा पंडित ओमजी शर्मा के सानिध्य में बड़े ही धूमधाम बाजे गाजे महिला मंडल द्वारा मंगल गीतों के साथ श्री आई माताजी मंदिर कलंबोली,पनवेल पर ध्वजा चढ़ाई गई । और समाज बंधुओ द्वारा विश्व कल्याण के लिए आई माताजी से सामूहिक प्रार्थना की गई । इस अवसर पर सीरवी विकास मंडल कलंबोली,पनवेल के प्रधान सेवक धन्नाराम एच गेहलोत बाली,संस्था के उपाध्यक्ष रामलाल वरपा, सचिव बाबूलाल भायल,महामंत्री टीकमराम पवार,भजन कलाकार चुन्नीलाल पवार, वालाराम भायल,केसाराम भायल,राजाराम भायल,गणेश पवार,बाबूलाल राठौड़,नेनाराम परिहारिया,कालूराम,कानाराम,मुकेश,बुद्दराज,जेठाराम ,जगाराम,नरेंद्र वरपा एवम् समस्त कार्यकारणी सदस्य माताएं, बहिने मौजूद रही। साथ ही भायल परिवार द्वारा अल्पाहार की व्यवस्था भी की गई थी सभी समाज बंधुओ ने अल्पाहार ग्रहण कर भायल परिवार का आभार व्यक्त किया।

भाजपा सरकार के पास विकास, कांग्रेस के पास विकास की कोई नीति नहीं : लाल सिंह आर्य

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । गोहद विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी लाल सिंह आर्य अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में पहुंचकर 17 नवंबर को होने जा चुनावी महासमर में भाजपा को जितने एवं अटेर से भाजपा का कमल खिलाने के लिए सर्व समाज के मतदाताओं के बीच पहुंचकर जनसंपर्क से समर्थन मांगेंगे और जनता का आशीर्वाद ग्रहण करेंगे। और वहीं ग्रामीण जनों ने फलों से तोड़कर उनका तुलादान किया।श्री आर्य अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत करौली डांग छैकुरी,भवरपुरा बजे सितौर छकुरी,देवपुरा निवारी का पुरा भाजपा युवा मोर्चा की बैठक मौ जनसंपर्क करते हुए भाजपा को जीतने के लिए मतदाताओं से संपर्क से समर्थन मांगा।

वन विभाग ने की लहार में बड़ी कार्यवाई,पांच आरा मशीन की जप्त

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक
पुष्पांजली टुडे

लहार- लहार क्षेत्र के रावतपुरा थाना अंतर्गत वनमंडल अधिकारी भिंड मोहम्मद माज़ के निर्देशानुसार एवं वन परिक्षेत्र अधिकारी भिंड वसंत शर्मा के नेतृत्व में वनमंडल भिंड के स्टाफ,सी सी एफ ग्वालियर उड़नदस्ता,वनमंडल दतिया का स्टाफ एवं स्थानीय पुलिस बल के सहयोग से लहार क्षेत्र के रावतपुर थाना अंतर्गत मुन्ना सिंह अखदेवा,चंद्रशेखर उर्फ़ चंदू एवं मिहोना में गुंजन चौधरी व करन सिंह की अवैध रूप से संचालित 5 आरा मशीनों पर वैधानिक करवायी कर मशीनों को जेसीबी की सहायता से उखाड़ा गया एवं मोटर आदि समस्त सामग्री जप्त कर प्रकरण पंजीबद्ध किया गया।श्री माज ने कहा अवैध रूप से संचालित कोई भी मशीन मिलती है तो सक्त से सक्त कार्यवाही होती रहेगी इस कार्यवाही के दौरान खास बात यह देखने को मिली की लहर क्षेत्र में नगर एवं आसपास कुछ बड़ी-बड़ी आरा मशीन है ऐसी संचालित हो रही है जहां पर समूचे क्षेत्र से अवैध रूप से भरे पेड़ आम सीसम की लकड़ी का व्यापार किया जा रहा है सरेआम दिन दहाड़े जंगलों से लकड़ी काटकर आरा मशीनों पर काटने के लिए लाई जा रही है।इस तरफ प्रशासन का कतई ध्यान नहीं है अगर प्रशासन गौर करें तो कुछ आरा मशीनों पर अवैध रूप से लाई गई लकड़ियों के बड़े-बड़े ढेर लगे हुए हैं जिनकी कटाई करके बाहर ट्रैकों में भरकर सप्लाई की जाती है।

सम्यग्ज्ञान की देवी मां सरस्वती का महापूजन हुआ

पुष्पांजली टुडे

बेंगलूरू ।श्री शांतिनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ श्रीरामपूरम- एल, एन पूरम में से बेंगलुरु मे सर्वप्रथमबार ज्ञान की देवी मां भगवती श्री सरस्वती माता का महापूजन हुआ, मुनि राजपद्मसागरजी म.सा एवं मुनि श्रमणसागरजी म.सा की कल्याणकारी निश्रा में पांच दिवसीय मां सरस्वती की जाप साधना की पूर्णाहुति के निमित्त श्री सरस्वती माता का महापूजन रखा महाराज साहब ने बताया कि जो भी व्यक्ति मां शारदे को याद करता है, उनके नाम का जाप करता है, उस व्यक्ति के जीवन मे से अज्ञानता दूर हो जाती है धर्म के मार्ग में आगे ब?ना हो तो भी ज्ञान की जरुरत प?ती है, और इस पूजन के अंदर 400 से भी अधिक श्रावक श्राविकाओनें लाभ लिया। इस अवसर पर संघ के सुरेश भंडारी, प्रसन चंडालिया चंदनमल भंसाली, सज्जनराज बरलोटा, राजमल बाफना, मोतीलाल बाफना, मनोज बरलोटा, पूनमबुरड, विजय सोनी आदि गणमान्य उपस्थित थे।संघ सचिव नरेंद्र आछा ने बताया की 5 दिन के सरस्वती अनुष्ठान में बहुत सारे आराधको भाग लिया । आज के अनुष्ठान के लाभार्थी संघवी इंदिराबाई विरदी चंद जी जी अच्छा परिवार रहे ।

21 अक्टूबर 23 शनिवार को जारी होगी निर्वाचन के लिए अधिसूचना

जिले के 5 विधानसभा क्षेत्रों के लिए 30 अक्टूबर तक लिए जायेंगे नामांकन पत्र

दैनिक पुष्पांजली टुडे
कलेक्ट्रेट परिसर भिण्ड में ही जमा होंगे पांचों विधानसभा के नामांकन पत्र

भिण्ड । कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी संजीव श्रीवास्तव ने बताया कि भिण्ड जिले के 5 विधानसभा क्षेत्रों के लिये विधानसभा आम निर्वाचन- 2023 की अधिसूचना 21 अक्टूबर शनिवार को जारी होगी और इसके साथ ही उसी दिन से नामांकन प्राप्त किये जाने की प्रक्रिया शुरू होगी। नामांकन पत्र 30 अक्टूबर 2023 सोमवार तक प्राप्त किए जायेंगे। जमा हुए नामांकन पत्रों की संविक्षा 31 अक्टूबर मंगलवार को होगी और इच्छुक प्रत्याशी 2 नवंबर गुरुवार तक नाम वापस ले सकेंगे।रविवार 22 अक्टूबर, दशहरा पर्व 24 अक्टूबर और चतुर्थ शनिवार 28 एवं रविवार 29 अक्टूबर शासकीय अवकाशों में नामांकन पत्र नहीं लिये जायेंगे। नामांकन पत्र प्रातः11 बजे से दोपहर 3 बजे तक

रिटर्निंग ऑफिसर की कोर्ट रूम में जमा किये जायेंगे।

पांचों विधान सभा के रिटर्निंग अधिकारी के लिए अलग-अलग कोर्ट रूम बनाए गए- विधानसभा निर्वाचन 2023 अंतर्गत 21 अक्टूबर 2023 से उम्मीदवारों के नामांकन पत्र कलेक्ट्रेट परिसर भिण्ड में जमा होंगे। कलेक्ट्रेट परिसर भिण्ड में विधानसभा प्रत्याशी के नामांकन पत्र जमा करने हेतु पांचों विधान सभा के रिटर्निंग अधिकारी के लिए अलग-अलग कोर्ट रूम बनाए गए हैं।जिनमें विधानसभा क्षेत्र-9 अटेर के लिए कक्ष क्रमांक 104 प्रथम तल, विधानसभा क्षेत्र-10 भिण्ड के लिए अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कार्यालय भिण्ड प्रथम तल, विधानसभा क्षेत्र-11 लहार के लिए डी.पी.सी. कार्यालय द्वितीय तल, विधानसभा क्षेत्र-12 मेहगांव के लिए अपर कलेक्टर कार्यालय प्रथम तल, विधानसभा क्षेत्र-13 गोहद के लिए जिला दण्डाधिकारी न्यायालय कक्ष क्रमांक 102 प्रथम तल बनाए गए हैं। इन्ही कोर्ट रूम में संबंधित विधान सभा के प्रत्याशियों द्वारा नामांकन पत्र जमा कराए जायेंगे। विधानसभाओं के अध्यर्थी अपनी विधानसभा अंतर्गत अनुविभागीय कार्यालय से या कलेक्ट्रेट परिसर से विधान सभा प्रत्याशी के लिए नामांकन फार्म प्राप्त कर सकते हैं।

नामांकन फार्म जमा करने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जायेगी। भिण्ड जिले की पांचों विधानसभा

कैसाराम चौधरी पूर्व विधायक का सीरवी समाज भवन अहमदाबाद में छतीष कौम की तरफ से किया सम्मान

दैनिक पुष्पाजंली टुडे / नारायणलाल सेंणचा

अहमदाबाद। मारवाड़ जंक्शन विधान सभा क्षेत्र के पूर्व विधायक भाजपा पार्टी के केसाराम चौधरी की जन संपर्क सभा का आयोजन अहमदाबाद सीरवी समाज भवन में रखा गया। केसाराम चौधरी ने संबोधित करते हुए, छतीष कौम को दोनो हाथ जोड़कर निवेदन किया कि आप सभी राजस्थान पधारकर भाजपा पार्टी को विजयी बनाए। उन्होंने कहा कि हमारी भाजपा पार्टी हमेशा आपकी सेवा मे तत्पर रहेगी। आप एक बार सेवा का अवसर प्रदान करे। इस आयोजन मे मारवाड़ जंक्शन विधानसभा क्षेत्र की छतीष कौम के प्रवासी बंधुओ ने बढ़चढ़कर भाग लिया और भरपूर समर्थन का आश्वासन दिया। इस मौके पर समस्त छतीष कौम की तरफ से केसाराम चौधरी का साफा पहनाकर स्वागत किया गया। इस शुभ अवसर पर सीरवी महासभा महाराष्ट्र प्रांत के अध्यक्ष दिनेश कुमार अहमदाबाद वडेर के अध्यक्ष छगनलाल सेप्टा, उपाध्यक्ष रमेश बर्फा, सचिव घीसाराम सेप्टा, सह-सचिव सोहनलाल बर्फा, कोषाध्यक्ष कानाराम पंवार एवम भेराराम परिहार, प्रभुभाई परिहार, निकुंज बर्फा सहित अनेक गणमान्य मौजूद थे।

शांतिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव कराने पुलिस ने कस्बे में किया पैदल मार्च बी एस एफ जवानों के साथ

दैनिक पुष्पांजली टुडे संवाददाता
मालनपुर

मालनपुर/विधानसभा चुनाव शांतिपूर्ण निष्पक्ष और भय मुक्त कराने पुलिस ने कमर कस ली हैद्य नवागत पुलिस अधीक्षक असित यादव ने चार्ज संभालते ही सभी थाना प्रभारियों को गुंडे और बदमाशों पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैंद्य इसी क्रम में शुक्रवार को मालनपुर थाना प्रभारी निरीक्षक डॉक्टर संतोष यादव ने थाने के पुलिस बल और बीएसएफ जवानों के साथ मालनपुर नगर के प्रमुख मार्गो पर पैदल मार्च किया और उन्होंने नगर वासियों से निष्पक्ष,, शांतिपूर्ण और भय मुक्त मतदान करने मतदान करने की अपील की शांति व्यवस्था बनाए रखें

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ गुजरात द्वारा छात्र हित में किये गये प्रस्ताव को एक बार फिर सफलता

पाटन ब्यूरो दैनिक पुष्पांजली टुडे

शिक्षा विभाग ने आज छात्र हित में किये गये प्रस्तावको मंजूरी दे दी है ताकि मुख्यमंत्री ज्ञान साधना छात्रवृत्ति योजना का लाभ सभी छात्रों को मिल सके और स्कूल बदलने की बाध्यता न हो.शिक्षा मंत्री श्री कुबेरभाई डिंडोर, शिक्षा मंत्री (राज्य स्तर) प्रफुल्लभाई पानसेरिया और शिक्षा सचिव श्री डॉ. विनोद राव का राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ गुजरात ने आभार प्रकट किया।

भाटी परिवार ने मां की स्मृति में समाज को किए ग्यारह हजार भेट,

पुष्पांजलि टुडे संवाददाता नरेश कुमार सिरवी पाली राजस्थान

सेपटावास गांव में स्व. मश्रीमति हसकी बाई 2/श स्व. वरदारामजी भा तयटी निवासी -सेपटावा की स्मृति मे एवं उनकी शोक सभा मे आज उनके सुपुत्र श्री प्रताप भाटी ,लक्षमण भाटी, कन्हैया भाटी, बस्तीमल सोनम द्वारा 8 गांव भीमालीया खेड़ा क्षेत्र में मृतुभोज न करके शिक्षा के लिए श्री मारवाड़ मेघवाल सेवा संस्थान शाखा, रानी को सहयोग हेतू 11000/-(ग्यारह हजार रूपये) राशि का चैक प्रदान किया, आपका श्री मारवाड़ मेघवाल सेवा संस्थान शाखा, रानी की ओर से भाटी परिवार को हार्दिक आभार व धन्यवाद ।इस मौके पर मेघवाल समाज के प्रबुद्ध जनों ने भाटी परिवार को धन्यवाद दिया।इस तरह से समाज मे प्रेणादयक कार्य किया है। भाटी परिवार का बहुत-बहुत आभार।

बस्तीमल, सोनल बर्री - खिंवाड़ा

कलश यात्रा निकाल कर लोकतंत्र में हिस्सेदारी का संदेश दिया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी संजीव श्रीवास्तव के निर्देशानुसार विधानसभा निर्वाचन 2023 हेतु स्वीप गतिविधि अंतर्गत महिलाओं द्वारा विधानसभा गोहद एवं लहार में कलश यात्रा निकाल कर मतदाता जागरूकता का संदेश दिया गया।लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने के लिए कलश यात्रा का आयोजन किया गया, ताकि कोई भी मतदाता मतदान से वंचित न रहे और 17 नवम्बर को अपने मत का प्रयोग अवश्य करें।मतदाताओं को उनके मताधिकार का प्रयोग करने हेतु प्रेरित किया गया। साथ ही विधानसभा निर्वाचन 2023 में शत-प्रतिशत मतदान करने हेतु मतदाताओं को प्रेरित किया गया कि वे बिना भय, लालच एवं दबाव के स्वतंत्र एवं निष्पक्ष मतदान करें।

पूर्व मंत्री व कांग्रेस प्रत्याशी चौ राकेश चतुर्वेदी करेंगे जनसंपर्क

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । कांग्रेस युवा नेता चौ. भरत चतुर्वेदी ने प्रेस को जानकारी देते हुए बताया कि मध्यप्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री भिंड विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी 21 अक्टूबर 2023 को दिल्ली से इटावा होते हुए काफिले के साथ शैल रॉयल मैरिज गार्डन पहुचेंगे,जहां कार्यकर्ताओं और समर्थकों द्वारा स्वागत किया जाएगा । स्वागत कार्यक्रम उपरान्त श्री चौधरी कार्यकर्ताओं के साथ पैदल यात्रा कर ईटावा रोड़ चौराहा स्थित पूर्व प्रधानमंत्री इंद्रा गांधी की मूर्ति पर माल्यार्पण कर शहर कोतवाली होते हुए परेड चौराहा,सदर बाजार,बजरिया,किला रोड़ होते हुए बाबा बनखंडेश्वर महाराज के दर्शन करेंगे, दर्शन के पश्चात श्री चौधरी अपने निवास चौधरी भवन गौरी किनारा स्थित निवास पर पहुंचकर कार्यकर्ताओं और समर्थकों से मुलाकात कर रूबरू होंगे।

राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ जिला इकाई मऊगंज का कार्यक्रम संपन्न

पुष्पांजली टुडे रीवा
पुष्पेंद्र सिंह (ब्यूरो चीफ मऊगंज)

मऊगंज। राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ जिला इकाई मऊगंज कार्यालय में प्रदेश पदाधिकारी द्वारा जिला इकाई मऊगंज एवं ब्लॉक मऊगंज, हनुमान, नईगड़ी के नियुक्ति पदाधिकारी का प्रमाण पत्र श्री राम निश्चय मिस मुख अतिथि में जिला संरक्षक श्री दीनानाथ मिश्रा देवी दयाल शर्मा जिला अध्यक्ष नरेंद्र सिंह सिंगर , जिला महामंत्री गिरीश पटेल उपाध्यक्ष देवेंद्र मिश्रा राज नारायण पटेल, मऊगंज ब्लॉक अध्यक्ष राम उजागर पटेल, महामंत्री सरोज मणि दुबे, गौरव सिंह, पंकज सिंह, लल्लू सिंह प्रतीक गुप्ता, रमेश पटेल बहादुर पटेल,सातवेंद्र पटेल ,प्रहलाद पटेल, प्रकाश मिश्रा के साथ कार्यक्रम की अध्यक्षता बृजवासी पटेल नगर पंचायत अध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि त्रिवेणी प्रसाद पांडे, यज्ञ नारायण दुबे, छोटे लाल शर्मा आदि की उपस्थिति में नियुक्ति प्रमाण पत्र वितरित किया गया।

आम चुनाव 2024: विपक्षी गठबंधन इंडिया की मजबूरी

सीट बँटवारे का पेच, बीजेपी को चुनौती देना आसान नहीं

आने वाले कुछ महीने भारतीय राजनीति के लिए बेहद ही महत्वपूर्ण हैं. अगले महीने या%नी नवंबर में 5 राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिज़ोरम में विधान सभा चुनाव होना है. इसके साथ ही अप्रैल-मई 2024 में लोक सभा चुनाव होना है. इन चुनावों के मद्द-ए-नज़र राजनीतिक दलों के साथ ही आम नागरिकों में भी हलचल तेज़ है. देश की सियासत पर बहस मीडिया के अलग-अलग मंचों पर ब-दस्तूर जारी है. सोशल मीडिया पर इसको लेकर लोग ज़्यादा मुखर नज़र आ रहे हैं. ऐसे तो लोक सभा चुनाव में अभी 5 महीने से ज़्यादा का वक़्त बचा है, लेकिन केंद्र की सत्ता को लेकर राजनीतिक दलों के बीच खींचतान जारी है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में बीजेपी के सामने लगातार तीसरी बार सत्ता में आने की चुनौती है. इसके लिए बीजेपी एनडीए के तले अलग-अलग प्रदेशों के सियासी समीकरणों को साधने के लिए अभी से रणनीति को ढाँचा देने में जुटी है. दूसरी ओर विपक्ष के सामने दोहरी चुनौती है. विपक्ष बीजेपी के जीत के सिलसिले पर लगाम लगाना चाहता है. इसके साथ ही कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों के सामने केंद्र की राजनीति में अपनी प्रासंगिकता बनाये रखने या प्रभाव बढ़ाने की भी चुनौती है. इन दोनों चुनौतियों में तालमेल बनाकर आगे बढ़ना कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दलों के लिए आसान नहीं है. इसके लिए कांग्रेस समेत 28 विपक्षी दल इंडिया गठबंधन के तले एकजुट हुए हैं. विपक्षी गठबंधन इंडिया की प्रासंगिकता को सार्थकता प्रदान करने के लिए लोक सभा चुनाव, 2024 तक विपक्ष के सामने एकजुटता को बरक़रार रखने की भी चुनौती है. इनके अलावा मायावती की बहुजन समाज पार्टी यानी बसपा उत्तर प्रदेश में, नवीन पटनायक की बीजू जनता दल ओडिशा में, के. चंद्रशेखर राव की भारत राष्ट्र समिति तेलंगाना में और वाई एस जगनमोहन रेड्डी की वाईएसआर कांग्रेस आंध्र प्रदेश में बिना एनडीए या %इंडिया% गठबंधन का हिस्सा बने अपना-अपना वर्चस्व बनाये रखने की चुनावी रणनीति पर आगे बढ़ रहे हैं. इनके अलावा आम चुनाव, 2024 में हाल ही में बीजेपी का दामन छोड़ने वाली एआईएडीएमके तमिलनाडु में फिर से अपनी खोई ज़मीन हासिल करने के लिए मुसलसल-जद्द-ओ-जहद में है. हालांकि बीएसपी, बीजेडी, बीआरएस, वाईएसआर कांग्रेस और एआईएडीएमके एनडीए का हिस्सा नहीं है, इसके बावजूद विपक्षी गठबंधन %इंडिया% से दूरी बनाकर इन दलों ने 2024 के लिए पहले ही बेहद मज़बूत दिख रही बीजेपी की राह को और आसान बना दिया है. अगर ये पाँचों दल विपक्षी गठबंधन इंडिया का हिस्सा होते, तो फिर बीजेपी के लिए 2024 में केंद्र की सत्ता पर बरक़रार रहना उतना आसान नहीं होता. इन दलों की दूरी ने विपक्षी गठबंधन की धार को चुनाव से पहले ही कमज़ोर कर दिया है. इंडिया गठबंधन के दायरे में विपक्ष की एकजुटता को अगले कुछ महीनों तक बनाये रखना इतना आसान नहीं है. इसमें कांग्रेस समेत जितने भी दल हैं, उनका निजी हित ही एकजुटता में सबसे बड़ी बाधा है. कांग्रेस को छोड़ दें, तो बाक़ी दलों की भूमिका राज्य विशेष तक सीमित है. ऐसे में हर दल की कोशिश है कि अपने-अपने प्रभाव वाले राज्य में उनको तरजीह मिले. इसका सीधा मतलब है कि उनको उस राज्य की ज़्यादातर सीटों पर लड़ने दिया जाए.

विपक्षी गठबंधन की इस दुविधा को राज्यों के उदाहरण से बेहतर तरीक़े से समझा जा सकता

है. पश्चिम बंगाल की बात करें, तो ममता बनर्जी का पूरा ज़ोर रहेगा कि प्रदेश की कुल 42 में से अधिकांश लोक सभा सीटों पर तणमूल कांग्रेस के उम्मीदवार को उतारा जाए. ममता बनर्जी के दावे में दम भी दिखता है. पश्चिम बंगाल में कांग्रेस और सीपीएम का जनाधार अब बेहद कम है, इस वास्तविकता से कोई इंकार नहीं कर सकता है. अगर विपक्षी गठबंधन के तहत टीएमसी के उम्मीदवारों को अधिकांश सीटों पर मौक़ा मिला तो बीजेपी के लिए पश्चिम बंगाल में काफ़ी नुकसान हो सकता है. उसके लिए पिछली बार की तरह पश्चिम बंगाल में बेहतर प्रदर्शन करना मुश्किल हो जायेगा. यह तथ्य है कि पश्चिम बंगाल में कांग्रेस और सीपीएम का जो भी थोड़ा बहुत जनाधार है, उससे टीएमसी उम्मीदवारों को तो जीतने में अच्छी-ख़ासी मदद मिल जायेगी. जबकि इसके विपरीत टीएमसी का साथ मिलने के बावजूद कांग्रेस और सीपीएम उम्मीदवारों के जीतने की संभावना उतनी नहीं रह जायेगी. कुछ इसी तरह का दावा उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी का भी है. मायावती के अलग रहने से उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी-कांग्रेस-आरएलडी गठजोड़ की ताक़त बीजेपी के सामने बेहद कम हो गयी है. साथ ही उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की स्थिति बेहद दयनीय है, यह भी किसी से छिपा नहीं है. ऐसे में समाजवादी पार्टी कतई नहीं चाहेगी कि कांग्रेस को ज़्यादा सीटे मिले, जिससे बीजेपी को नुक़सान की संभावना कम हो जाए. इसके साथ ही अखिलेश यादव के सामने 2024 के लोक सभा चुनाव में एक और चुनौती है. उन्हें दिखाना है कि बिना मुलायम सिंह यादव के उत्तर प्रदेश में अभी भी समाजवादी पार्टी की राजनीतिक हैसियत है. मुलायम सिंह यादव के निधन के बाद यह पहला मौक़ा होगा, जब समाजवादी पार्टी किसी विधान सभा चुनाव या लोक सभा चुनाव में उतरेगी. इस स्थिति में अखिलेश यादव कांग्रेस को ज़्यादा सीटें देकर न तो विपक्षी गठबंधन का और न ही अपनी पार्टी का उत्तर प्रदेश में नुक़सान कराना चाहेंगे. इसके अलावा बिहार में भी सीट बँटवारे पर कमोबेश पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश जैसी ही स्थिति है. यहां तेजस्वी यादव की आरजेडी और नीतीश कुमार की जेडीयू कुछ वैसा ही दावा कर सकती है. बिहार में कांग्रेस की स्थिति भी बंगाल और यूपी की तरह ही अच्छी नहीं है. ऐसे में आरजेडी और जेडीयू की कोशिश होगी कि प्रदेश की कुल 40 लोक सभा सीटों में से कांग्रेस को बहुत कम सीटें मिले. कांग्रेस को ज़्यादा सीटें देने का परिणाम आरजेडी 2020 के विधान सभा चुनाव में भुगत चुकी है. उस वक़्त नतीजों के बाद सियासी गलियारों के साथ ही आम लोगों में भी इसकी खूब चर्चा हुई थी कि अगर आरजेडी विधान सभा की कुल 243 में कांग्रेस को 70 सीटों पर चुनाव लड़ने नहीं देती तो उस वक़्त महागठबंधन को आसानी से बहुमत हासिल हो जाता. बिहार विधान सभा चुनाव, 2020 में कांग्रेस 70 में से महज़ 19 सीटों पर जीत पायी थी. जबकि आरजेडी 144 सीटों पर लड़कर 75 सीटों पर जीत दर्ज कर सबसे बड़ी पार्टी बनी थी. इसके साथ ही महागठबंधन की गाड़ी 110 सीटों पर रुक गयी थी, जबकि बीजेपी-जेडीयू की अगुवाई में एनडीए 125 सीट जीतकर किसी तरह से बहुमत हासिल करने में कामयाब रही थी. आम चुनाव 2024 में आरजेडी बिहार में इस ग़लती को दोहराना नहीं चाहेगी. इन राज्यों के अलावा मोटे तौर से विपक्षी गठबंधन के सामने केरल में सीटों के बँटवारे को लेकर सबसे ज़्यादा समस्या आने वाली है. केरल में कुल 20 लोक सभा सीट है. लोक सभा चुनाव में जीत के नज़रिये से यहां की राजनीति में बीजेपी की मौजूदगी न के बराबर है. केरल में अब तक कांग्रेस और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) यानी सीपीएम के बीच ही आमने-सामने की टक्कर होते रही है. केरल में इन दोनों के बीच में अगर तालमेल बन जाता है, तो प्रदेश की सभी 20 सीटें विपक्षी गठबंधन के हिस्से में आ जायेगी, इसमें भी कोई शक-ओ-शुब्हा नहीं है. लेकिन समस्या यही है कि सीपीएम चाहेगी कि उसे ज़्यादा सीटें मिले. पूरे देश में सीपीएम की एकमात्र उम्मीद केरल ही है. ऐसे में वो केंद्र की राजनीति में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखना चाहेगी. अगर केरल में सीपीएम और कांग्रेस के बीच गठजोड़ को लेकर बात बन जाती है, सीपीएम की कोशिश होगी कि वो ज़्यादा से ज़्यादा सीटों के लिए कांग्रेस पर दबाव बनाये. दिल्ली और पंजाब में भी विपक्षी गठबंधन के तहत सीट बँटवारे का पेच उलझा हुआ है. यह आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच की पेच है. कांग्रेस की स्थिति इन दोनों ही राज्यों में पिछले कुछ सालों में काफ़ी ख़राब हुई है. वहीं इन दोनों ही राज्यों में पिछले कुछ सालों में आम आदमी पार्टी का राजनीतिक दखूल तेज़ी से बढ़ा है. दोनों ही राज्यों में आम आदमी पार्टी की सरकार है. इन दोनों ही राज्यों में वर्तमान में आम आदमी पार्टी की राजनीतिक हैसियत सबसे ज़्यादा है.

सम्पादकीय

इजरायल के साथ अमेरिका के हित

इजरायल और हमास के बीच जो युद्ध शुरू हुआ, वह 12 दिनों से चल रहा है. अमेरिका और ब्रिटेन की जहां तक बात है, उनकी सॉलिडैरिटी कहीं न कहीं इजरायल के साथ ही है. पिछले कई वर्षों से अमेरिका की बौद्धिक क्षमता का, और कुछ हद तक आर्थिक क्षमता के भी बैकबोन इजरायल के लोग हैं. इसी कारण अमेरिका कभी भी इजरायल का साथ नहीं छोड़ता है, वह इजरायल का साथ छोड़ कर पश्चिम एशिया में अपने हित भी नहीं साध सकता है. उसको लगता है कि हमास के खिलाफ जो युद्ध चल रहा है, उसमें अमेरिका को इजरायल के साथ ही रहना चाहिए, बस उसका डर ये है कि युद्ध का दायरा कहीं बहुत व्यापक न हो जाए. बाइडेन भी इजरायल होकर आए हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि युद्ध अभी कुछ दिन और चलेगा और कहीं इजरायल को खत्म करने के एजेंडे पर, इस्लामिक ब्रदरहुड के नाम पर, मिडल ईस्ट के देश कहीं एक न हो जाएं, इसलिए वह बार-बार इजरायल के साथ की बात दोहराते हैं. वह यह कहना नहीं भूले कि अमेरिका इजरायल के साथ चट्टान की तरह खड़ा है. ऐसा इसलिए कि वह पश्चिम एशिया के देशों को संदेश देना चाहते थे कि अमेरिका उस पूरे इलाके में शांति की कोशिश कर रहा है, वह इजरायल को भी मना रहा है, लेकिन वे संयम रखें और एक साथ मिलकर इजरायल पर धावा न बोल दें. ऋषि सुनक की अगर हम बात करें, तो यह बात किसी से छिपी नहीं है कि बेलफोर्ड डेक्लरेशन जो प्रथम विश्वयुद्ध के समय हुआ था, और ब्रिटेन ने ऑटोमन अंपायर को हरा कर इजरायल पर (जहां आज इजरायल है, उस जमीन पर) कब्जा किया था. उन्होंने तब यहूदियों से यह भी वादा किया था कि वे अगर ब्रिटेन की मदद करें तो वह उनके लिए इजरायल भी बनाने में मदद करेगा. उस समय यहूदी यूरोप के कई देशों में अच्छा-खासा जीवन बिता रहे थे और आर्थिक तौर पर ताकतवर भी थे. ब्रिटेन को युद्ध लड़ने के लिए उन्होंने मदद भी की थी। हालांकि, इसके बाद भी ब्रिटेन ने 20 वर्षों से भी अधिक का समय लिया और राजनीतिक सत्ता यहूदियों के हाथ में नहीं दी. वर्साय की संधि और हिटलर के उदय के बाद स्थितियां बदलीं. हिटलर को यही लगा कि यहूदियों ने तो ब्रिटेन का साथ दिया है और फिर नाजियों ने हॉलोकास्ट किया, जिसमें 60 लाख यहूदी मारे गए. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कहीं न कहीं एक सहानुभूति थी और इसीलिए 14 मई 1948 को उनके लिए इजरायल का गठन कर दिया. इजरायल के बनने के बाद से ही पूंजीवादी देश जिनका अगुआ अमेरिका है और ब्रिटेन उसके साथ है, वे इजरायल के साथ ही रहे. उन्होंने गाहे-बगाहे बैलेंसिग एक्ट के तहत फिलीस्तीन का नाम भले लिया हो, लेकिन उनकी रणनीति यही रही है कि इजरायल को ही समर्थन दिया जाए. हमारे देश के फिलीस्तीन और इजरायल दोनों के साथ अच्छे संबंध हैं. नरेंद्र मोदीनीत सरकार ने इजरायल और फिलीस्तीन दोनों ही के मसलों को बहुत संतुलित तरीके से, संवेदनशीलता के साथ उठाया है. हम लोग आगे बढ़े हैं. बाइडेन और ऋषि सुनक सीधे तौर पर पश्चिम एशिया की भू-राजनीति, या तेल की कूटनीति या वैश्विक संसाधनों पर वर्चस्व जमाने की जो राजनीति है, उसके लिए जिम्मेदार हैं. व्यक्तियों का नाम लेने का मतलब उनके देशों यानी अमेरिका और ब्रिटेन से है. तो, पश्चिम एशिया की उथल-पुथल के लिए कहीं न कहीं ये दोनों देश ही जिम्मेदार हैं. समस्या ये है कि इसमें कई और देश कूदने को तैयार हैं. तुर्किए ने भी हमास के लिए समर्थन जताया है, वह यूरोप के कई देशों के भी करीब है. उधर रूस और यूक्रेन का युद्ध चल ही रहा है. तो, इनको डर है कि इसकी चिंगारी यूरोप के देशों तक न पहुंच जाए, इसलिए वे इसके लिए मेहनत कर रहे हैं. भारत की जहां तक बात है, वह इस मामले को लेकर चिंतित है, हमारा पूरा कंसर्न इस मामले पर है कि मानवीय त्रासदी और न बढ़े. बाकी, भारत का आतंक को लेकर और युद्ध को लेकर जो स्टैंड है, वह पूरी दुनिया को पता है. भारत ने हालांकि यह हमेशा कहा है कि दोनों देश आपसी विवादों का निबटारा शांतिपूर्ण तरीके से और वार्ता के जरिए करें. भारत ने ये भी प्रस्ताव दिया है कि इसमें भारत की जो भी भूमिका होगी, वह निभाने को तैयर है. भारत सजग है, चिंतित है और पूरे हालात पर नजर भी बनाए हुए है, लेकिन वह हड़बड़ी में नहीं है. भारत को पता है कि उसको इस मुद्दे पर कब और क्या स्टैंड लेना है। दिक्कत ये है कि हमारे देश की जो विपक्षी पार्टियां हैं, वे मुस्लिम अपीजमेंट के लिए ही फिलीस्तीन के पक्ष में खड़े होते हैं, क्योंकि उनको लगता है कि हमारे देश के मुसलमान फिलीस्तीन के साथ हैं और अगर वे उनके हक में बयान देंगे तो उनको चंद वोट मिल जाएंगे. अपोजीशन के इस एडवेंचरिज्म में सरकार को नहीं फंसना चाहिए. पिछली तमाम सरकारों ने नेहरू के समय से फिलीस्तीन का समर्थन किया है. मोरारजी भाई, अटलजी और नरेंद्र मोदी की सरकार ने भी फिलीस्तीन का समर्थन किया है, लेकिन आतंकवाद के खिलाफ ये सरकार रही है. नरेंद्र मोदी की सरकार ने ये साफ कर दिया है कि आतंक के साथ समझौता नहीं हो सकता. उन्होंने कहा है कि दोनों ही पक्ष बातचीत करें, मसलों को हल करें, लेकिन उसमें आतंक की जगह नहीं है. जहां तक शांतिवार्ता की बात है, तो चार से अधिक बार इजरायल और फिलीस्तीन शांति की मेज पर भी बैठे हैं. इजरायल हरेक बार टू-नेशन थियरी के लिए राजी भी हो जाता है, लेकिन फिसीस्तीन के जो चरमपंथी हैं, वे एक इंच जमीन भी देने को तैयार नहीं हैं. उनको पूरा का पूरा इजरायल ही चाहिए.

राजनीति का वो चाणक्य, जिसने दुनिया को कहा अलविदा तो कफन भी नसीब नहीं हुआ

सीएम की कुर्सी और वो कहानी... में आज हम पढ़ाएंगे मध्यप्रदेश के उस मुख्यमंत्री का किस्सा, जिसकी राजनीतिक शैली में साम-दाम-दंड-भेद का मिश्रण इस कदर घुला था कि लोग उन्हें सियासत का चाणक्य भी कहते थे। अक्खड़ मिजाज के चलते उनके करीबियों की संख्या काफी छोटी थी, लेकिन व्यक्तित्व का प्रभाव ऐसा था कि कोई भी उन्हें नजरअंदाज नहीं कर पाता था। यूं तो मिलने आने वाली महिलाओं का खड़े होकर स्वागत करते थे, लेकिन राजमाता विजयाराजे सिंधिया के लिए खड़ा होना उन्हें पसंद नहीं था। बिना अपॉइंटमेंट वो किसी से मिलते नहीं थे। लग्जरी शौक के लिए चर्चा में रहे तो हसीना कांड का खामियाजा भी भुगतना पड़ा। लेकिन जब दुनिया को अलविदा कहा तो न आखिरी ख्वाहिश पूरी हुई और न कफन नसीब हुआ। यह बात है साल 1962 की और नया नवेला बना राज्य मध्यप्रदेश अपने तीसरे विधानसभा तीसरा को देख चुका था। कांग्रेस पार्टी इस चुनाव में बहुमत हासिल नहीं कर सकी थी। तब के मुख्यमंत्री रहे कैलाश नाथ काटजू के नेतृत्व में चुनाव लड़ा गया था और हार का उपहार मिला था। खंडवा के भगवंतराव मंडलोई को 18 महीनों के लिए दूसरी बार सूबे की कमान मिली। इससे पहले, राज्य के पहले सीएम रविशंकर शुक्ल के निधन पर उन्हें 20 दिन के लिए मुख्यमंत्री बनाया गया था।

अक्टूबर, 1963 में कांग्रेस का कामराज प्लान आया तो मंडलोई को कुर्सी छोड़नी पड़ी। एक बार फिर कैलाशनाथ काटजू को मुख्यमंत्री बनाने की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी थी। लेकिन राजनीति के चाणक्य डीपी मिश्र (द्वारका प्रसाद मिश्र) ने ऐसा इंतजाम किया कि काटजू का नाम कट गया और शपथ मिश्र जी ने उठाई। यह 12 साल बाद यह कांग्रेस में उनकी शानदार वापसी थी। यहां आपको वापसी शब्द खटका या नहीं खटकना चाहिए। दरअसल द्वारका प्रसाद मिश्र कट्टर कांग्रेसी थे। फिर भी साल 1951 में नेहरू की चीन और पाकिस्तान को लेकर बनाई नीतियों के विरोध में उन्होंने पार्टी छोड़ दी थी। लोक कांग्रेस नाम की पार्टी बनाकर चुनाव में उतरे, लेकिन वोट देना तो दूर जनता ने उनके भाषण को भी नहीं सुना। खैर, 1963 में इंदिरा गांधी के हस्तक्षेप से उनकी कांग्रेस पार्टी में वापसी हुई। चार साल बाद जब डीपी मिश्र के नेतृत्व में चुनाव हुए तो कांग्रेस को 170 सीटें मिलीं। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के 24 विधायक दल-बदल कर कांग्रेस में शामिल हो गए। इस तरह से एक बार फिर 1967 में मिश्र मुख्यमंत्री बन गए। डीपी मिश्र के अक्खड़ मिजाज के कई किस्से काफी चर्चित हैं। राजमाता विजयाराजे सिंधिया और उनके बीच का

टशन का किस्सा। मिश्र ने ग्वालियर की राजमाता के सामने राज परिवारों को काफी खरी-खोटी भी सुनाई थी। ऐसा ही एक वाकया पहाड़ों की रानी कहे जाने वाले पचमढ़ी में युवा कांग्रेस का सम्मेलन के दौरान भी हुआ था। मिश्र ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था %ये रजवाड़े कभी भी कांग्रेस के नहीं हो सकते, क्योंकि ये लोग लोकतंत्र के विरोधी हैं। लोकतंत्र में हम किसी को ना नहीं कह सकते, इसलिए हमें इनको पार्टी में लेना पड़ा, लेकिन जल्द ही हम इनको निपटा देंगे। इनका भरोसा नहीं किया जा सकता। उस सम्मेलन में ग्वालियर रियासत की पूर्व राजमाता विजयाराजे सिंधिया पहली पंक्ति में ही बैठी थीं। सब उनकी तरफ देखने लगे। राजमाता को यह बेहद अपमानजनक लगा। विजयाराजे में अपनी आत्मकथा में लिखा था, मैंने तभी तय कर लिया था कि मैं ये टिप्पणी हवा में नहीं जाने दूंगी। द्वारका प्रसाद मिश्र मिलने आनी वाली महिलाओं के सम्मान में हमेशा खड़े हो जाते थे। लेकिन राजमाता के लिए खड़ा होना उन्हें पसंद नहीं था। तो उन्होंने इसका भी एक तोड़ निकाल लिया था। उन्होंने अपने कार्यालय में एक चेंबर भी बनवा रखा था। जब भी उन्हें पता चलता कि विजयाराजे मिलने आई हैं तो वो अपनी कुर्सी से उठकर चेंबर में चले जाते थे। ऐसा ही एक किस्सा था कि राजमाता मिश्र जी से मिलने पहुंचीं तो वो अपने चेंबर में चले गए। मुख्यमंत्री की कुर्सी खाली देख राजमाता आगंतुक कुर्सी पर बैठ गईं। उनके बैठने के बाद डीपी मिश्र चेंबर से बाहर आए, तो सम्मान के नाते राजमाता को उनके सामने खड़ा होना पड़ता था। जब भी विजयाराजे आतीं तो वो ऐसा ही करते थे। डीपी मिश्र और राजमाता के बीच खटपट कभी कम नहीं हुई, बल्कि बढ़ती ही गई। सितंबर 1966 में ग्वालियर में एक छात्र आंदोलन हुआ। पुलिस ने आंदोलनकारियों पर गोलियां चला दीं। राजमाता (उस वक्त की ग्वालियर की सांसद) जब इस मसले पर मिश्र से मिलने भोपाल पहुंची। यहां डीपी मिश्र ने उन्हें लंबे इंतजार के बाद अपने ऑफिस में बुलाया। डीपी मिश्र भीतर के कमरे से आए और बिना अभिवादन किए ही बोले- छात्र आंदोलन के अलावा कुछ चर्चा करनी हो तो बताइए। राजमाता समझ गईं थी कि दिखावे का वक्त जा चुका है, लेकिन चुनाव सिर पर थे। इसलिए वह चुप रहीं। साल 1967 में विधानसभा चुनाव हुए तो टिकट बंटवारे को लेकर दोनों के बीच ठन गई। राजमाता अपने लोगों को टिकट दिलाना चाहती थीं। इस पर तंज कसते हुए मिश्र ने कहा कि आपकी रियासत तो जा चुकी है। इससे नाराज विजयाराजे सिंधिया ने बगावत कर दी। उन्होंने ग्वालियर के आसपास के जिलों में अपने प्रत्याशी उतार दिए। उन दिनों जो पोस्टर चिपकाए गए थे, उन पर लिखा था- राजमाता का आशीर्वाद प्राप्त कैंडीडेट। विजयाराजे और माधवराव सिंधिया ने खूब प्रचार भी किया, लेकिन डीपी का सितारा बुलंदी पर था। नतीजा यह हुआ कि राजमाता के प्रत्याशी हार गए। 1967 का चुनाव जीतकर मिश्र ने एक बार फिर मुख्यमंत्री पद की कुर्सी संभाली। लेकिन कुछ ही महीनों बाद राजमाता ने 36 विधायकों को तोड़कर द्वारका प्रसाद की सरकार गिरा दी। गोविंद नारायण सिंह के नेतृत्व संविद सरकार बनी, लेकिन कूटनीतिक दांव-पेंच चलकर चाणक्य मिश्र ने 19 महीने में संविद किला ढहा दिया। सरकार गिरते ही कांग्रेस विधायक दल की बैठक हुई, जिसमें मुख्यमंत्री के लिए मिश्र के नाम का प्रस्ताव दिया गया। तभी एक चुनावी याचिका पर फैसला आया, जिससे प्रदेश की राजनीति में भूकंप आ गया। चुनावी खर्च को लेकर अदालत में एक याचिका दायर की गई थी, जिस पर यह फैसला आया कि डीपी मिश्र ने चुनाव में निर्धारित खर्च सीमा से 249 रुपये 72 पैसे ज्यादा खर्च किए थे। अब मिश्र को छह साल तक चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य करार दे दिया था। यह याचिका कमल नारायण शर्मा ने लगाई थी। वह साल 1963 में कसडोल सीट पर हुए उपचुनाव में मिश्र के प्रतिद्वंदी थे। हालांकि, इसके बाद भी वे राजनीति में सक्रिय रहे। इंदिरा गांधी के बाद उन्होंने राजीव गांधी के साथ भी कुछ दिन तक काम किया, लेकिन राजनीति की मुख्यधारा से दूर होते गए।

शहाबुद्दीन के बेटे ओसामा के पीछे चलती रहीं 100 से ज्यादा लग्जरी गाड़ियां

ओसामा शहाब और उसके साथी सलमान को पुलिस ने कड़ी सुरक्षा के बीच बुधवार को कोर्ट में पेश किया। गाड़ी से उतरते ही ओसामा को देखने के बाद समर्थक जिंदाबाद के नारे लगाने लगे। वहीं, भीड़ को संभालने में पुलिस को काफी मशक्कत का सामना करना पड़ा। इसके पूर्व ओसामा शहाब यूपी की तरफ से सिवान में प्रवेश किया। ओसामा शहाब फार्च्यूनर गाड़ी में सवार था और उसके पीछे 100 से अधिक लग्जरी गाड़ियों का काफिला था। गुठनी में भी काफी संख्या में उसके समर्थक सड़क पर खड़े होकर काफिले का इंतजार कर रहे थे। कोर्ट में पेशी के पूर्व ओसामा के समर्थकों को यह लग रहा था कि कोर्ट ओसामा शहाब को जमानत दे देगी, लेकिन कोर्ट ने न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश दिया। कोर्ट के फैसले के बाद समर्थकों के चेहरों पर मायूसी छा गई। कोर्ट में पेशी के बाद मंडल कारा जाने के दौरान समर्थक ओसामा को उसके निजी वाहन में बैठाने के लिए अ? थे। इस पर पुलिस को हल्का बल प्रयोग करना पड़ा। इसके बाद पुलिस ने ओसामा को अपनी गाड़ी में बैठाया और मंडल कारा की ओर निकल पड़ी। मंडल कारा ले जाने के दौरान गाड़ी के आगे-पीछे भारी संख्या में समर्थकों की भीड़ मंडल कारा की ओर बढ़ चली। इधर सुरक्षा लिहाज से मंडल कारा के मुख्य गेट के सामने पुलिस बल की भारी तैनाती की गई थी। हुसैनगंज थाने के प्रतापपुर निवासी व पूर्व सांसद मोहम्मद शहाबुद्दीन के बेटे ओसामा शहाब पर पहली बार 16 जून 2014 को चर्चित तेजाब कांड के एकमात्र गवाह राजीव रोशन की हत्या कराने की प्राथमिकी कराई गई थी। रोशन 16 अगस्त 2004 को अपने भाइयों गिरीश राज और सतीश राज की हत्या का एकमात्र गवाह था। पुलिस ने अनुसंधान के दौरान ओसामा पर आरोप सही न पाये जाने पर उसका नाम केस से निकाल दिया था। ओसामा का नाम चार अप्रैल 2022 को अपराध के लिए फिर से जुड़ा। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के महुवल में खान ब्रदर्स के नाम जाने जानेवाले रईस खान के काफिला पर एके 47 से गोली चलवाने का आरोप उस पर रईस खान लगवाया। इसमें एक व्यक्ति की मौत भी हुई थी। इस घटना में भी ओसामा का नाम आया था। इस मामले में भी पुलिस ने जांच के दौरान आरोप सत्य न पाये जाने पर अनुसंधान में उसे क्लीन चीट दे दी। मोतिहारी के रानी कोठी में भूमि विवाद में एक अगस्त 2023 को मारपीट और फायरिंग हुई थी। मामले में दोनों पक्षों की तरफ से थाना में आवेदन दिया गया था। रानी कोठी में अपनी बहन के ससुराल में जमीन बंटवारे को लेकर चल रहे विवाद में अपने साथियों के साथ फायरिंग करने का आरोप ओसामा पर लगाया गया है इस मामले में पुलिस ने ओसामा पर प्राथमिकी की है।

क्या शिल्पा शेट्टी पति राज कुंद्रा से हो गईं अलग ?

हिंदी सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा अपनी निजी जिंदगी को लेकर अक्सर लाइमलाइट में रहते हैं। हाल ही में, राज ने सोशल मीडिया पर एक ऐसा पोस्ट कर दिया है, जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि वह शिल्पा से अलग हो रहे हैं। देखिए उनका पोस्ट। राज कुंद्रा इन दिनों अपनी आगामी फिल्म ङ्क 69 को लेकर चर्चा में हैं। कुछ दिन पहले फिल्म का ट्रेलर भी रिलीज किया गया था, जिसमें राज के साथ जेल में आपबीती की झलक दिखाई गई। इस बीच एक्टर ने सोशल मीडिया पर एक ऐसा पोस्ट शेयर कर दिया, जिसे देख हर कोई हैरान रह गया। दरअसल, राज कुंद्रा ने आधी रात को ट्विटर हैंडल पर एक ट्वीट शेयर किया, जिसने इंटरनेट पर हलचल मचा दी। ट्वीट में राज ने लिखा, हम अलग हो गए हैं। आप से अनुरोध है कि हमें इस मुश्किल फेज में थोड़ा समय दें।÷ इसके साथ राज ने टूटे दिल और हाथ जोड़ने वाली इमोजी भी बनाई। इस पोस्ट के सामने आने के बाद सवाल उठने लगे कि क्या राज कुंद्रा और शिल्पा शेट्टी अलग हो गए हैं। कई लोग इसे प्रमोशन बता रहे हैं। एक यूजर ने पूछा, अलगाव मतलब, तलाक एक ने कहा, घटिया नौटंकी। एक यूजर ने लिखा, मूवी पब्लिसिटी के लिए कुछ भी कर सकते हैं। एक ने कहा, अलगाव मतलब, मास्क का राज कुंद्रा से अलगाव। इसी तरह कई लोग राज कुंद्रा को जमकर ट्रोल भी कर रहे हैं। राज कुंद्रा की आगामी फिल्म यूटी 69 उनकी आपबीती की कहानी बयां करती फिल्म है। शाहनवाज अली द्वारा निर्देशित राज की फिल्म का ट्रेलर बीते दिनों रिलीज हुआ था। फिल्म 3 नवंबर 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसमें राज ही लीड हीरो हैं।

अदाओं से आग लगाने में माहिर हैं नरगिस फाखरी

उन्होंने अपनी खूबसूरती से बॉलीवुड को चकाचौंध किया और रॉकस्टार बनकर बड़े पर्दे पर इस कदर छाई कि हर किसी को अपना दीवाना बना लिया. हालांकि, उनकी कई बातों ने विवाद भी खड़े कर दिए. दरअसल, हम बात कर रहे हैं नरगिस फाखरी की, जिन्होंने 20 अक्टूबर 1979 के दिन न्यूयॉर्क में जन्म लिया था, लेकिन उनके दिल में हिंदुस्तान बसता है. बर्थडे स्पेशल में हम आपको नरगिस की जिंदगी के चंद किस्सों और विवादित हिस्सों से रूबरू करा रहे हैं. मोहम्मद फाखरी और मैरी फाखरी के घर में जन्मीं नरगिस खुद को ग्लोबल सिटिजन बताती हैं. दरअसल, उनके पिता पाकिस्तान से ताल्लुक रखते थे, जबकि मां चेक रिपब्लिक से हैं. नरगिस जब महज छह साल की थीं, उस दौरान उनके पैरेंट्स का तलाक हो गया था. वहीं, इसके कुछ वक्त बाद उनके पिता का इंतकाल हो गया था. बता दें कि नरगिस का बचपन बेहद गरीबी में गुजरा. दरअसल, उनकी मां बतौर रिफ्यूजी अमेरिका

आई थीं. वहां रिफ्यूजी कैंप में ही उनकी मुलाकात मोहम्मद फाखरी से हुई थी. नरगिस के परिवार की आर्थिक हालत काफी खराब थी, जिसके चलते उन्हें काफी कम उम्र से ही काम करना पड़ा. आलम यह था कि नरगिस को सड़क से बर्फ हटाने का काम भी करना पड़ता था. हालांकि, पढ़ाई-लिखाई में नरगिस काफी तेज थीं. ऐसे में उन्होंने फाइन आर्ट्स के साथ-साथ साइकोलॉजी में ग्रैजुएशन किया. नरगिस फाखरी की ख्वाहिश टीचर बनने की थी, लेकिन वह दुनिया भी घूमना चाहती थीं. ऐसे में उन्होंने मॉडलिंग को बतौर करियर चुन लिया, जिसके चलते उन्होंने कई मॉडलिंग एजेंसियों के साथ ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, स्विटजरलैंड, थाईलैंड, हॉन्गकॉन्ग, जर्मनी और ब्रिटेन आदि देशों में काम किया. साल 2009 के दौरान नरगिस किंगफिशर की कैलेंडर गर्ल बनीं, जिससे उनके लिए बॉलीवुड का रास्ता खुल गया. किंगफिशर के कैलेंडर में नरगिस को देखकर इम्तियाज अली ने उन्हें फिल्म रॉकस्टार ऑफर की, जिसमें हीर कौल बनकर वह हर किसी की धड़कन बन गईं. इसके बाद उन्होंने मद्रास कैफे, मैं तेरा हीरो, अजहर और अमावस आदि फिल्मों में काम किया. आपको यह जानकर हैरानी होगी कि नरगिस बेहतरीन सिंगर भी हैं. उन्होंने साल 2017 के दौरान उनका दूसरा सिंगल वूफर रिलीज हुआ था. बता दें कि अपनी अदाकारी से लोगों का दिल जीतने वाली नरगिस फाखरी तमाम विवादों में भी फंस चुकी हैं. दरअसल, उनका एक विज्ञापन पाकिस्तान के एक ऊर्दू अखबार में प्रकाशित हुआ था, जिसमें वह लाल रंग की ड्रेस पहनकर मोबाइल फोन लिए नजर आई थीं, जिस पर काफी विवाद हुआ था. इसके अलावा वह अपने तमाम बयानों को लेकर भी विवाद में फंस चुकी हैं, जिनमें शारीरिक संबंधों से लेकर बैटमैन और सुपरमैन तक को लेकर विवादित टिप्पणियां शामिल हैं.

प्रियंका चोपड़ा ने मनारा के लिए लिखा प्यारा मैसेज

मनारा चोपड़ा बिग बॉस के घर में इस वक्त कई कंटेस्टेंट्स का दिल जीतने के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी तबाही मचा रही हैं। घर में पहली कंटेस्टेंट बनकर एंट्री लेने वाली मनारा चोपड़ा अपने सादगी भरे अंदाज से हर किसी का दिल जीत रही हैं। अंदर भले ही दिल के मकान में रहने वालों ने उन्हें धोखा देते हुए नॉमिनेशन में डाल दिया हो, लेकिन पहले ही हफ्ते में वह दर्शकों के दिलों की रानी बन चुकी है। बिग बॉस की पहली कंटेस्टेंट बनकर आई जिद एक्टर को फैंस के प्यार के साथ-साथ अब बड़ी बहन प्रियंका चोपड़ा का भी पूरा सपोर्ट मिला। मनारा चोपड़ा उन अभिनेत्रियों में शुमार हैं, जिन्होंने बिना अपनी बहनों के नाम का सहारा लिए बिना ही इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाई है। प्रीमियर एपिसोड में भी जब मुनव्वर ने घर में आते ही उनसे प्रियंका और परिणीति से जुड़ा सवाल किया, तो वह उनके बारे में बात करने से बचती नजर आई। हालांकि, ग्लोबल आइकॉन प्रियंका चोपड़ा अपनी छोटी कजिन सिस्टर को अपना समर्थन देने से पीछे नहीं रहीं। प्रियंका चोपड़ा ने हाल ही में मनारा के साथ एक फोटो अपनी इंस्टा स्टोरी पर शेयर की। दोनों की ये फोटो साल 2000 की है, जब देसी गर्ल ने मिस वर्ल्ड का क्राउन जीता था। इस अनदेखी तस्वीर में उनके साथ मनारा चोपड़ा भी हैं। फोटो में मनारा की एज काफी कम लग रही है। बालों में हेयर बैंड लगाए और गले में चोकर पहने मनारा बचपन में बेहद ही क्यूट लग रही हैं। इस फोटो को शेयर करने के साथ ही प्रियंका चोपड़ा ने मनारा के लिए एक खास मैसेज लिखते हुए उन्हें उनके इस नए सफर के लिए बधाई भी दी। प्रियंका चोपड़ा ने अपनी इंस्टा स्टोरी पर लिखा, थ्रोबैक फोटो विद मनारा चोपड़ा, गुड लक लिटिल वन। बता दें कि बीते एपिसोड में जब घर के कुछ सदस्य उनसे उनकी बहनों प्रियंका चोपड़ा और परिणीति चोपड़ा के बारे में पूछ रहे थे, तो मनारा की आंखें नम हो गयी। मनारा प्रियंका चोपड़ा की बुआ की बेटी हैं। मनारा चोपड़ा के बिग बॉस 17 के सफर की शुरुआत काफी अच्छी हुई है। फैंस ने पहले हफ्ते उन्हें सुरक्षित करने के लिए भर भरकर वोट्स दिए।

पार्थ समथान संग होगी भूषण कुमार की बहन खुशाली कुमार की शादी

एक्ट्रेस खुशाली कुमार इन दिनों खबरों में छाई हुई हैं. हाल ही में उनकी शादी को लेकर कई रिपोर्ट्स सामने आईं. एक रिपोर्ट में ये भी कहा गया कि पार्थ और खुशाली दोनों एक-दूसरे के प्यार में हैं. खुशाली कुमार टीवी एक्टर पार्थ समथान संग शादी करने वाली हैं. शादी दिसंबर 2023 या फिर जनवरी 2024 में हो सकती है. रिपोर्ट में ये भी मेंशन था कि खुशाली की फैमिली शादी की तैयारियों में बिजी है. अब एक्ट्रेस ने खुद इन खबरों पर रिएक्ट किया है. खुशाली ने इंस्टा स्टोरी पर पोस्ट कर इन खबरों को सिरे से नकार दिया है. उन्होंने इन खबरों को झूठा बताया. खुशाली ने लिख- झूठ. मुझे अफवाहें पसंद हैं. मुझे हमेशा अपने बारे में ऐसी अमेजिंग बातें पता चलती हैं जो मैं खुद भी नहीं जानती. खुशी और पार्थ की बात करें तो दोनों की मुलाकात म्यूजिक वीडियो पहले प्यार का पहला गम के सेट पर मिले थे. दोनों की ऑनस्क्रीन केमिस्ट्री को काफी पसंद किया गया. इसके बाद दोनों फिर से एक म्यूजिक वीडियो में दिखे. इस म्यूजिक वीडियो का नाम है धोखा. ये सॉन्ग काफी पसंद किया गया. बता दें कि खुशाली टी सीरीज के मैनेजिंग डायरेक्टर भूषण कुमार की बहन हैं. खुशाली ने अपना करियर फैशन डिजाइनर के तौर पर शुरू किया. 2015 में उन्होंने म्यूजिक वीडियो के जरिए एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में एंट्री की. वहीं पार्थ समथान टीवी के पॉपुलर एक्टर हैं. उन्हें शो कसौटी जिंदगी की से नेम-फेम मिला. पार्थ को शो गुमराह, बेस्ट फ्रेंड फॉरएवर, सावधान इंडिया, ये है आशिकी, कैसी है यारियां, प्यार तूने क्या किया जैसे शोज में नजर आ चुके हैं.

अगर फोन चाहिए तो मेरे भाई को कैंसर से बचाओ

इंडिया वर्सेज पाकिस्तान वर्ल्ड कप मैच के दौरान उर्वशी रौतेला का 24 गोल्ड कैरेट आईफोन खो गया था. एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करके इसकी जानकारी दी थी. बता दें कि एक्ट्रेस की फोन की कीमत एक करोड़ रुपए है. वहीं अब एक शख्स का दावा है कि उसके पास उर्वशी का खोया हुआ आईफोन है लेकिन वह इसे तभी वापस करेगा जब एक्ट्रेस उसकी एक डिमांड पूरी करेंगी. उर्वशी का आईफोन अपने पास होने का दावा करने वाले शख्स ने एक्ट्रेस को मेल लिखकर इस बात की जानकारी दी है. साथ ही मेल में अपनी शर्त भी लिखी है. जिसके बाद उर्वशी ने उस मेल का स्क्रीनशॉट अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर पोस्ट किया था. इसमें लिखा था- मेरे पास आपका फोन है. अगर आपको यह चाहिए तो आपको मेरे भाई को कैंसर से बचाने में मेरी मदद करनी होगी. उर्वशी ने इस मेल का स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए थम्ब्स अप का इमोजी पोस्ट किया था. बता दें कि 4 दिन पहले उर्वशी ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अपने 24 कैरेट गोल्ड वाले आईफोन के गुम होने की जानकारी दी थी. उन्होंने लिखा था, अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में मेरा 24 कैरेट असली सोने का आई फोन खो गया! अगर किसी को यह मिले तो प्लीज मदद करें. जितनी जल्दी हो सके मुझसे कॉन्टैक्ट करें! उर्वशी ने आगे नरेंद्र मोदी स्टेडियम और अहमदाबाद पुलिस को टैग करते हुए यह भी लिखा था कि वे किसी ऐसे शख्स को टैग करें जो उनकी मदद कर सके. वर्कफ्रंट की बात करें तो उर्वशी रौतेला आखिरी बार बिग बॉस ओटीटी विनर एलविश यादव के साथ म्यूजिक वीडियो हम तो दीवाने में दिखाई दी थीं. अब एक्ट्रेस फिल्म दिल है ग्रे और ब्लैक रोज में दिखाई देंगी. इसके अलावा उनके पास पाइपलाइन में जोसेफ डी सामी का एक अनटाइटल्ड प्रोजेक्ट भी है.

नौ दिन के व्रत में सेहत से न करें खिलवाड़

एजेंसी

पूरे देश में इन दिनों शारदीय नवरात्रि चल रहे है। भक्त मां दुर्गा का आशीर्वाद पाने के लिए नौ दिनों का उपवास कर रहे हैं। व्रत सिर्फ धार्मिक तौर पर ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य के अनुसार, भी बेहद फायदेमंद माना जाता है। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो व्रत रखने से शरीर डिटॉक्स होता है। कुछ दिन कम खाना खाने या फिर सात्विक भोजन करने से शरीर में मौजूद विषाक्त पदार्थ बाहर निकलते हैं और शरीर भी साफ हो जाता है। इससे किडनी और लिवर भी बेहतर होता है। व्रत रखने से ब्लड शुगर लेवल, हाई बीपी कंट्रोल और दिल संबंधी बीमारियों का खतरा भी कम होता है। लेकिन व्रत के दौरान यदि लापरवाही बरती जाए तो स्वास्थ्य लाभ होने की जगह सेहत को नुकसान भी होसकता है। तो चलिए आज आपको बताते हैं कि यदि पूरे नौ दिनों का उपवास रख रहे हैं तो किन चीजों से बचना चाहिए। आइए जानते हैं....

हाइड्रेशन का ध्यान न रखना

व्रत में ज्यादातर तरल पदार्थों का ही सेवन करना चाहिए। इससे शरीर में डिहाइड्रेशन की समस्या नहीं होती। व्रत के दौरान अपनी डाइट में पानी के अलावा ग्रीन टी, छाछ, सब्जियों का रस, छाछ, ताजे फलों का रस जरुर पिएं। यदि आप व्रत में पूरी तरह से शरीर को हाइड्रेटेड नहीं रखेंगे तो आपको गैस, कब्ज और

अपच जैसी परेशानियां हो सकती हैं।

ज्यादा काम न करें

व्रत रखने के साथ–साथ शरीर को आराम देना भी जरुरी है। कुछ लोगों को व्रत रखने की आदत नहीं होती ऐसे में वह जब नौ दिनों का उपवास करते हैं तो उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। ऐसे में यदि आप भी नौ दिनों का व्रत रख रहे हैं तो ज्यादा काम न करें, शरीर को आराम दें और ज्यादा देर धूप में भी जाने से बचें।

ज्यादा देर तक सोते रहना

कुछ लोग व्रत के दौरान सारा दिन आराम करते हैं लेकिन पूरा दिन आराम करने के कारण भी सेहत बिगड़ सकती है। यदि आप खाली पेट सोते रहेंगे तो उठने के बाद सिर में दर्द और तनाव महसूस होगा। इसलिए व्रत में खुद को व्यस्त रखें और ज्यादा आराम करने से परहेज करें।

व्रत के बाद ज्यादा खाना खा लेना

व्रत के बाद भूख मिटाने के लिए कुछ लोग ज्यादा मात्रा में खाना खाते हैं लेकिन ज्यादा खाना खाने के कारण कब्ज, एसिडिटी की समस्या भी हो सकती है। व्रत के बाद यदि आप ज्यादा मात्रा में खाएंगे तो पाचन क्रिया पर असर पड़ेगा और आप बीमार हो सकते हैं।

ज्यादा मीठी चीजें खाना

व्रत के दौरान फलाहार में अक्सर सभी ज्यादातर मीठी चीजें खा लेते हैं लेकिन मीठी चीजें खाने से आपका ब्लड शुगर लेवल बढ़ सकता है। इसलिए ज्यादा मीठा खाने से बचें। कुछ ऐसे फल भी होते हैं जिसमें शुगर ज्यादा मात्रा में होती है जैसे केला, अनानास, चीकू और चेरी। इन सब चीजों की जगह आप नाशपाती, संतरा और पपीता जैसे फलों का सेवन करें।

ऑयली फूड्स न खाएं

ज्यादा ऑयली फूड्स जैसे चिप्स खाने से भी बचें। इस तरह का खाना खाने से आपको एसिडिटी हो सकती है। इस तरह के खाना खाने से आपको ज्यादा नींद आएगी जिससे दिनचर्या के कार्य प्रभावित हो सकते हैं।

सेंधा नमक खाएं

व्रत वाले खाने में सादे नमक की जगह सेंधा नमक इस्तेमाल करें, क्योंकि सेंधा नमक सात्विक भोजन में ही आता है।

क्या आप भी खाते हैं बिना ब्रश किए खाना तो हो जाएं अर्लट

एजेंसी

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की तरह ओरल यानी की मुंह की हेल्थ का ध्यान रखना भी जरुरी है। एक्सपर्ट्स की मानें तो यदि व्यक्ति

की ओरल हेल्थ खराब हो तो उसे कई तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए हमेशा अपने मुंह की सफाई का ध्यान रखना जरुरी है। हेल्थ एक्सपर्ट्स भी यह सलाह देते हैं कि मुंह की सफाई के लिए सुबह उठने के बाद और रात में सोने से पहले ब्रश जरुर करना चाहिए। इससे मुंह में मौजूद बैक्टीरिया और कीटाणु साफ होते हैं। यदि यह हानिकारक बैक्टीरिया साफ नहीं किए जाएं तो यह पेट में चले जाते हैं जिसके कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती है। कुछ लोग बिना ब्रश किए हुए चाय पीना शुरु कर देते हैं लेकिन यह आदत आपके लिए गंभीर परेशानी खड़ी कर सकती है। तो चलिए आपको बताते हैं सुबह बिना ब्रश खाने की आदत आपके स्वास्थ्य को कैसे नुकसान पहुंचाती है। आइए जानते हैं....

दिल की बीमारियों का खतरा

हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो बिना ब्रश किए हुए खाने से दिल संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ता है। दांतों पर जमा प्लाक, बैक्टीरिया और गंदगी शरीर में जाकर दिल की नसों को अवरुद्ध कर देती है जिसके कारण नसों में ब्लॉकेज की समस्या होती है। इसके कारण दिल तक ब्लड सर्कुलेशन भी कम हो जाता है और हार्ट अटैक का खतरा बढ़ता है।

मुंह से आएगी बदबू

जब भी सुबह हम सोकर उठते हैं तो मुंह से दुर्गंध आती है। इस दुर्गंध के लिए मुंह में मौजूद बैक्टीरिया जिम्मेदार होते हैं हालांकि रोजाना ब्रश करने से मुंह की बदबू दूर होती है और सांस भी फ्रेश हो जाती है लेकिन यदि आप बिना ब्रश किए हुए खाना खाते हैं तो आपके मुंह से सारा दिन गंदी बदबू आती है।

गर्भवती महिलाओं को नुकसान

यदि गर्भवती महिलाएं बिना ब्रश किए हुए कुछ खा लेती हैं तो इससे सिर्फ उनका ही नहीं बल्कि बच्चे का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। इसके कारण प्रीमेच्योर डिलीवरी, जन्म के बाद बच्चे का वजन कम होना और कई सारी अन्य समस्याएं हो सकती हैं।

मसूड़े हो सकते हैं खराब

यदि आप ब्रश नहीं करते तो इससे मसूड़े कमजोर होने लगते हैं। हानिकारक बैक्टीरिया के कारण इनमें सूजन, फूलना और खून निकलने जैसी समस्याएं हो सकती है। दांतों में बिना ब्रश किए हुए खाना खाने के कारण समस्या और भी ज्यादा बढ़ सकती है।

पीरियड्स में हैवी ब्लीडिंग को भूलकर भी ना करें नजरअंदाज

एजेंसी

हर महीने महिलाओं को पीरियड्स के दिनों से गुजरना पड़ता है। पीरियड्स तीन दिन से लेकर सात दिनों तक भी हो सकते हैं। वहीं कुछ महिलाओं को सामान्य रूप से माहवारी

होती है। तो वहीं कुछ महिलाओं को पीरियड्स के दौरान बहुत ज्यादा दर्द और ब्लीडिंग से गुजरना पड़ता है।

हर महीने महिलाओं को पीरियड्स के दिनों से गुजरना पड़ता है। पीरियड्स तीन दिन से लेकर सात दिनों तक भी हो सकते हैं। वहीं कुछ महिलाओं को सामान्य रूप से माहवारी होती है। तो वहीं कुछ महिलाओं को पीरियड्स के दौरान बहुत ज्यादा दर्द और ब्लीडिंग से गुजरना पड़ता है। कई बार समस्या इतनी ज्यादा बढ़ जाती है कि महिलाओं को पीरियड्स के दौरान हर घंटे पैड चेंज करना होता है।

पीरियड्स के दौरान बहुत ज्यादा ब्लीडिंग होने की समस्या को मेनोरेजिया कहा जाता है। इसमें पीरियड्स के दौरान असामान्य रूप से ब्लीडिंग होती है या पीरियड्स अधिक दिनों तक चलते हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि मेनोरेजिया होने की क्या वजह होती है और किस स्थिति में डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

मेनोरिजिया की वजह

मेनोरेजिया के कई कारण हो सकते हैं। कई बार ऐसा हार्मोन असंतुलन की वजह से होता है। महिलाओं के यूट्रस में हर महीने में एक परत बनती है और यह परत पीरियड्स के दौरान शरीर से ब्लीडिंग के जरिए बाहर आती है। लेकिन जब शरीर में हार्मोन का असंतुलन होता है तो यह परत काफी ज्यादा मोटी हो जाती है। तब पीरियड्स के दौरान ज्यादा ब्लीडिंग के रूप में यह बाहर आती है।

वहीं कई बार ओवलूशन न हो पाने के कारण भी हार्मोन संतुलन बिगड़ जाता है और हैवी ब्लीडिंग होने लगती है।

कई बार गर्भाशय में फाइब्रॉएड्स होने के कारण भी कई बार हैवी ब्लीडिंग होने लगती है। ऐसे समय में भी पीरियड्स लंबे समय तक हो सकते हैं।

गर्भाशय में कैंसर या फिर अंडाशय में कैंसर होने की वजह से भी अधिक ब्लीडिंग हो सकती है। हांलाकि कई बार ऐसा आनुवांशिकता ध्की वजह से भी होता है।

जानिए इसका इलाज

हार्मोनल समस्या होने की कंडीशन में हेल्थ एक्सपर्ट्स कुछ दवाएं लेने की सलाह देते हैं। इन दवाओं के सेवन से हार्मोन को शरीर में संतुलित किया जाता है। ऐसे में आप डॉक्टर की सलाह पर दवाएं ले सकते हैं। इसके अलावा डॉक्टर आपको पॉलीप्स या फाइब्रॉएड्स होने पर सर्जरी कराने की सलाह भी दे सकते हैं। हैवी ब्लीडिंग के कई गंभीर मामलों में सर्जरी की जरूरत पड़ सकती है। इसमें गर्भाशय को भी निकाला जा सकता है। लेकिन इसके बाद आपको पीरियड्स नहीं होंगे।

कुछ घरेलू उपाय

इस समस्या से निपटने के लिए आप सरसों के दानों को मिक्सी में डालकर पीस लें। फिर पीरियड्स में हैवी ब्लीडिंग होने पर एक चम्मच सरसों के दाने के पाउडर को गुनगुने दूध के साथ लें। इससे आपको काफी आराम मिलेगा।

इसके अलावा सौंफ को पीसकर उसका पाउडर बना लें। फिर इस पाउडर को एक कप पानी के साथ करीब 5 मिनट तक उबालें। फिर इसे गर्मागर्म छानकर पिएं।

वहीं हैवी ब्लीडिंग की समस्या से बचने के लिए बर्फ के कुछ टुकड़े को एक तौलिए में अच्छए से बांध लें। फिर 15 से 20 मिनट के लिए इसे अपने पेट के निचले हिस्से पर रखें। इससे आपको आराम मिलेगा। बता दें कि इसके लिए मेथी के बीजों को भी लाभकारी माना जाता है। दो कप पानी में एक चम्मच मेथी के बीज को उबाल लें। फिर जब पानी आधा रह जाए तो इसमें एक चम्मच शहद मिला लें। अब इस गुनगुने पानी का सेवन करें। दिन में करीब 2–3 बार इस पानी को पीने से लाभ मिलता है।

दक्षिण भारत के 'कश्मीर' में होने वाली बर्फबारी का उठाएं लुत्फ

घूमने के शौकीन लोग अक्सर छुट्टियां मिलते ही ट्रिप पर निकल जाते हैं। ऐसे में अगर आप इस बार दक्षिण भारत घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको आंध्र प्रदेश में मौजूद कुछ बेहतरीन हिल स्टेशन को जरूर एक्सप्लोर करना चाहिए।

जब भी साउथ–इंडिया में घूमने का जिक्र किया जाता है, तो लोग सबसे पहले केरल, कर्नाटक या फिर तमिलनाडु का नाम लेते हैं। बता दें कि दक्षिण भारत में मौजूद आंध्र प्रदेश एक ऐसा राज्य है, जहां पर घूमने के लिए एक से एक बेहतरीन जगहें मौजूद हैं। सभी सैलानियों के लिए आंध्र प्रदेश की खूबसूरती और यहां मौजूद कुछ बेहतरीन हिल स्टेशन बेहद ही खास है। लेकिन अगर आप भी इस बार दक्षिण भारत घूमने का प्लान बना रहे हैं और बर्फबारी देखना चाहते हैं। तो आज हम आपको आंध्र प्रदेश में घूमने वाली कुछ बेहतरीन और अद्भुद जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं।

लांबासिंगी

बता दें कि आंध्र प्रदेश में लांबासिंगीध लम्बसिंगी उन चुनिंदा हिल स्टेशन में से एक है। जहां पर अधिक संख्या में सैलानी घूमने के लिए पहुंचते हैं। बता दें कि इस हिल स्टेशन को आंध्र प्रदेश का 'कश्मीर' भी कहा जाता है। विचित्र घाटियों और ठंडे तापमान के साथ, दक्षिणी क्षेत्र में लम्बासिंगी एकमात्र जगह है जहां बर्फबारी होती है। यह छोटा सा गांव सुन्दर सफेद धुंद से ढका हुआ होता है। ऐसे में अगर आप भी आंध्र प्रदेश घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको सबसे पहले इस जगह पर आना चाहिए। इसके अलावा आप यहां पर घाट रोड़, कोंडाकरला पक्षी अभ्यारण्य, थाजंगी जलाशय और अन्नावाराम मंदिर जैसी बेहतरीन जगहों पर घूमने के लिए जा सकते हैं।

नल्लमला हिल्स

इसके अलावा आप प्रदेश में नल्लमला हिल्स स्टेशन को भी एक्सप्लोर कर सकते हैं। पूरे दक्षिण–भारत में यह स्थान सुगम्य वातावरण और मनमोहक दृश्यों के लिए फेमस है। जनवरी से लेकर मार्च के शुरूआती दिनों में नल्लमला हिल्स स्टेशन का मौसम एकदम सुहावना होता है। इसलिए यहां पर भारी संख्या में सैलानी घूमने के लिए पहुंचते हैं। इसके अलावा आप यहां पर जंगल सफारी और ट्रैकिंग का लुत्फ भी उठा सकते हैं।

अरकू वैली

अद्भुद और बेहतरीन वैली सिर्फ हिमाचल व उत्तराखंड में ही नहीं, बल्कि आंध्र प्रदेश में भी मौजूद है। विशाखापत्तनम जिले में स्थित अरकू वैली अपने अद्भुत दृश्व और शांत वातावरण के लिए भी जाना जाता है। इस हसीन वैली में घूमने के बाद आप अन्य वैली को भूल जाएंगे। अरकू वैली में मौजूद ट्राइबल म्यूजियम, बॉटनिकल गार्डन, भीमुनिपटनम और बोर्रा गुफा जैसी बेहतरीन जगहों को दोस्तों के साथ एक्सप्लोर कर सकते हैं। इसके साथ ही आप यहां पर एडवेंचर एक्टिविटीज का भी मजा उठा सकते हैं।

पापीकोंडालू

इसके अलावा आंध्र प्रदेश में स्थिति पापीकोंडालू बेहद खूबसूरत होने के साथ बेहतरीन पर्वत श्रृंखला भी है। आंध्र प्रदेश के साथ–साथ पूरे दक्षिण–भारत में यह स्थान नयनसुख के नाम से जाना जाता है। गोदावरी नदी के किनारे स्थित होने के वजह से यह जगह भारत के सैलानियों के लिए बेहद ही खास हिल स्टेशन है। पापीकोंडालू की हसीन वादियों में मौजूद पत्तिसीमा नदी द्वीप, पापिकोंडा नेशनल पार्क और किन्नरसानी वन्यजीव अभयारण्य जैसी बेहतरीन जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं। यहां पर आप बोटिंग का भी लुत्फ उठा सकते हैं।

पिंपल्स से खराब हो रहा है पूरा फेस तो अपनाएं ये तरीके, हफ्ते भर में मिलेगी बेदाग स्किन

एजेंसी

आप किसी फंक्शन में जा रहे होते हैं पर आपके चेहरे पर निकली हुई फुंसी या लंबे समय से पैठ जमाया हुआ फोड़ा आपके अच्छे खासे प्लान को खराब कर देता है। ऐसे में आप मुंहासों से जल्द से जल्द छुटकारा पाना चाहेंगी। मुंहासे त्वचा की सतह पर निकले हुए सफेद या लाल रंग के दाने होते हैं। जिनमें मवाद और पस जमा होता है। इन पके हुए दाने को दबाने से मवाद निकलने लगता है, जिससे गड्ढा सा बन जाता है। इसीलिए मुंहासों को दबाकर कभी नहीं हटाना चाहिए नहीं तो उस जगह पर पिंपल्स के निशान बन जाते हैं और जल्दी हल्के नहीं होते हैं। इससे चेहरे पर दाग बन जाते हैं। अगर आप भी पिंपल्स से छुटकारा पाना चाहते हैं तो आप भी घरेलू उपाय कर सकते हैं। आज हम आपको कुछ घरेलू उपायों के बारे में ्ताएंगे। जिससे आपको जल्द से जल्द छुटकारा मिल जाएगा और आपका चेहरा बेदाग हो जाएगा।

मुंहासों के लिए घरेलू उपाय

बेसन

घरेलू उपाय में पिंपल्स को दूर करने के लिए बेसन का इस्तेमाल करना चाहिए।

इसके उपयोग के लिए एक चम्मच बेसन में पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इसके बाद उस पेस्ट को अपने चेहरे पर 10 मिनट तक लगाए रखें और फिर हल्के हाथों से अपने चेहरे को धीरे–धीरे धो लें। यह आपकी ऑयली स्किन से पिंपल्स को हटाने का सबसे बेहतरीन नुस्खा है।

हल्दी और शहद

हल्दी एंटी–इंफ्लेमेटरी जैसे गुणों से भरपूर होती है। इसलिए यह स्किन पर पिंपल्स को सिकोड़ देती है। जबकि शहद स्किन से बैक्टीरिया को हटाता है। इसके लिए आप आध चम्मच हल्दी में एक चम्मच शहद मिलाकर गीले चेहरे पर लगाएं और 5 मिनट तक लगाकर रखें। इस उपाय को करने से ना सिर्फ आपके चेहरे पर निखार आएगा, बल्कि पिंपल्स से छुटकारा भी मिल जाएगा।

ओट्स

ओट्स के उपयोग से भी पिंपल्स की समस्या दूर हो जाती है। फेस की स्किन पर एक्सेस ऑयल भी पिंपल्स के कारण ही आता है। लेकिन ओट्स त्वचा से ऑयल सोखता है और पिंपल्स को दूर करता है। पिंपल्स से निजात पाने के लिए पिसे ओट्स में थोड़ा सा बेसन मिलाकर पेस्ट बना लें और चेहरे पर अप्लाई करें। फिर इसके बाद फेस को धो दें।

दही

त्वचा पर दही लगाने से डेड स्किन सेल्स हट जाते हैं और स्किन में निखार आता है। दही में लैक्टिक एसिड पाया जाता है। दही के एंटी–बैक्टीरियल भी बहुत अच्छा असर दिखाते हैं। आधा कप दही लेकर चेहरे पर लगाएं। इसके बाद अपने चेहरे को 10 मिनट बाद धो लें। मुंहासों को हटाने के लिए हर दूसरे दिन दही का प्रयोग करें।

एलोवेरा

ऐलोवेरा कई मायनों में हमारी स्किन के लिए फायदेमंद होता है। इसी तरह आप ऐलोवेरा का इस्तेमाल पिंपल्स की समस्या को दूर करने के लिए भी कर सकती हैं। पिंपल्स को हटाने के लिए आप ताजे ऐलोवेरा के गूदे का इस्तेमाल करें। यह आपकी स्किन के लिए ज्यादा फायदेमंद होता है। इसके अलावा आप फोड़े–फुंसियों पर भी ऐलोवेरा का गूदा लगा सकते हैं। इस उपाय को करने से ना सिर्फ पिंपल्स की समस्या दूर होगी, बल्कि आपको साफ और निखरी स्किन मिलेगी।

कल है शारदीय नवरात्र का पांचवा दिन, जानें स्कंदमाता को भोग में क्या लगाएं

एजेंसी

शारदीय नवरात्र हिंदुओं का बड़ा त्योहार है, जो नौ दिनों तक मनाया जाता है। कल नवरात्र का पांचवा दिन है। इस दिन स्कंदमाता की पूजा–अर्चना की जाती है। देवी मां को प्रसन्न करने के भक्त व्रत भी रखते हैं। माना जाता है कि सच्चे मन से मां दुर्गा के इस रूप की आराधना करने से शत्रुओं का पराजय होता है और मन की इच्छा भी पूरी होती है।स्कंदमाता को युद्ध के देवता की मां के नाम से भी जाना जाता है। ऐसे में आप माता को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो नवरात्र के पांचवे दिन सुबह जल्दी उठें और स्नान कर स्कंदमाता की विधिवत पूजा करें। इसके बाद मां का पसंदीदा भोग लगाएं। मां को केले का भोग बहुत प्रिय है। इसके अलावा आप केसर की खीर या साबूदाने की खीर भी भोग में लगा सकते हैं।

केसर की खीर

सामग्री

1 लीटर दूध, आधा कप चावल, एक कप चीनी, 10 केसर के धागे, एक चम्मच ड्राई फ्रूट्स

बनाने की विधि

सबसे पहले चावल को साफ कर लें, इसके बाद पानी में कुछ देर के लिए भिगो दें।

अब एक पैन में दूध उबालें, इसमें चावल और ड्राई फूट्स डालें।

इस मिश्रण को अच्छी तरह मिला दें।

चावल को पकाने के दौरान बीच–बीच में बड़े चम्मच की मदद से चलाते रहें।

अब चीनी मिलाएं, खीर को कुछ देर तक पकाएं।

एक अलग बर्तन में गर्म दूध लें, इसमें केसर के धागे डालें।

जब आपका खीर तैयार हो जाए, तो इसमें केसर का दूध डालें और अच्छे से मिलाएं।

साबूदाने की खीर

सामग्री

1 कप साबूदाना, आधा कप चीनी, 1 चम्मच इलायची पाउडर

बनाने की विधि

साबूदाना को 1–2 घंटे के लिए भिगो दीजिए।

हाईकमान की अवमानना करने वालों के टिकट की पैरवी की

पायलट बोले- मैंने किसी दावेदार का विरोध नहीं किया, मिलकर तय करेंगे कौन होगा सीएम

पुष्पांजलि टुडे संवाददाता
नरेश कुमार सिरवी पाली राजस्थान

पाली राजस्थान। दौसा। कांग्रेस की पहली सूची का इंतजार है। इस बीच, टिकट को लेकर सामने आ रही बातों पर पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने बड़ा बयान दिया है। जब उनसे दोबारा मानेसर मुद्दे को याद करने का सवाल किया तो उन्होंने कहा- मुख्यमंत्री कह चुके हैं कि हमारे बीच की प्यार-मोहब्बत मिसाल बन चुकी है। सीएम फेस पर पायलट ने कहा- सभी मिलकर तय करेंगे कि कौन सीएम बनेगा। दरअसल, दौसा जिले के कांदोली में शुक्रवार को प्रियंका गांधी की सभा होगी। इसकी तैयारियों का जायजा लेने पायलट गुरुवार शाम 5ः30 बजे कांदोली पहुंचे थे। यहां मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा- जहां तक टिकट की बात है, जो पिछले साल घटनाक्रम हुआ, उसमें कुछ लोगों पर पार्टी में अनुशासनहीनता के आरोप लगे थे। लेकिन, जीतने वाले जिन भी दावेदारों के प्रपोजल आए, उनका मैंने खुले मन से स्वागत किया। चाहे उस समय सोनिया गांधी की अवमानना किसी ने की हो। फिर भी मैंने कहा- पार्टी हित में जो भी हो, उसे टिकट मिलना चाहिए। मैंने एक भी दावेदार का विरोध नहीं किया और प्यार-मोहब्बत का इससे बड़ा प्रमाण नहीं हो सकता। दौसा के कांदोली में शुक्रवार को प्रियंका गांधी की सभा होगी। इसकी तैयारियों को लेकर सचिन पायलट और मंत्री ममता भूपेश ने व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

कौन किस पद पर कब तक रहेगा, यह हाईकमान तय करेगा–दिल्ली में गुरुवार को हुई में प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई थी, जिसमें मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सीएम पद को लेकर बयान दिया था कि मैं सीएम पद छोड़ना चाहता हूं, लेकिन ये मुझे नहीं छोड़ रहा और छोड़ेगा भी नहीं। जब पायलट से इसके बारे में पूछा गया तो वे बोले- मुझे इस कॉन्फ्रेंस की जानकारी नहीं है। लेकिन, कौन किस पद पर कब बैठता है, इसका निर्णय कांग्रेस लीडरशिप करता है। कांग्रेस अध्यक्ष, सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी तय करते हैं कि कौन नेता किस पद पर सरकार या संगठन में काम करेगा। पार्टी नेतृत्व जो भी निर्णय करेगा, वह सबको स्वीकार होगा। पायलट ने कहा- 2018 में मैं प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष था। पार्टी के सभी नेताओं ने मिलकर मेहनत की और सरकार बनाई। आज भी सभी नेता मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं। इसे लेकर भाजपा के अंदर बहुत घबराहट है। वहां आपसी टकराव और खींचतान है। पायलट ने कहा- भाजपा ने अभी सिर्फ 40 टिकट बांटे हैं, लेकिन 80 झगड़े हो गए। इससे साफ होता है कि भाजपा में अंदरखाने बहुत कुछ चल रहा है। मैं उस पर कमेंट नहीं करना चाहता, लेकिन कांग्रेस पार्टी पूरी तरह एकजुट होकर चुनाव लड़ने जा रही है। सभी नेताओं ने सकारात्मक माहौल में चर्चा कर प्रत्याशी चयन किए हैं, बहुत जल्द लिस्ट भी सामने आ जाएगी। फोटो सभा स्थल का है। जहां शुक्रवार को इस सभा में प्रियंका गांधी करीब 2 घंटे रुकेंगी।

विधायक–हाईकमान तय करेंगे सीएम–मुख्यमंत्री फेस के सवाल पर पायलट ने कहा- देश के किसी भी राज्य में चुनाव होते हैं तो सामूहिक नेतृत्व रहता है और चुनाव के बाद कांग्रेस हाईकमान नेता सदन तय करता है। एआईसीसी ने भी स्पष्ट कर दिया है कि मिलकर चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने कहा- चुनाव के बाद विधायक और हाईकमान तय करेंगे कि 2023 में सीएम कौन बनेगा।

जनता की आवाज को दबाया नहीं जा सकता–हॉर्स ट्रेडिंग के आरोपों पर पायलट ने कहा- भाजपा ने कहां कोशिश नहीं की। राजस्थान में हमने भाजपा के 163 के बहुमत को हराकर सरकार बनाई थी। ऐसे में उनके मन में चोट होगी कि हमारी सरकार क्यों नहीं बन पाई। पायलट ने यह भी कहा- मैंने जो मुद्दे उठाए थे, उन्हें पार्टी ने स्वीकार किया है और एआईसीसी ने भी आगे कदम उठाने की बात कही थी। सभी ने मिलकर पार्टी के लिए काम किया है और लेकिन मैं कह देना चाहता हूं जनता की आवाज को नहीं दबाया जा सकता।

राम लाल साह बेकस की पुस्तक का विमोचन एवं समीक्षा ?

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली

ग्वालियर। साहित्य अकादमी मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल से सम्बद्ध पाठक मंच थाठीपुर ईकाई के मासिक पाठक मंच का आयोजन दिनांक 21 अक्टूबर 2023 को दोपहर 3ः00 बजे विवेकानन्द पुनर्वास केन्द्र, थाठीपुर ग्वालियर में किया जावेगा। जिसमें ग्वालियर के मशहूर गज़लकार रामलाल साहू की नवोदित कृति ÷दर्द ए दिल÷ का विमोचन एवं समीक्षा की जाना है। कार्यक्रम की अध्यक्षता रामअवध विश्वकर्मा करेंगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ सुरेश सम्राट, विशिष्ट अतिथि हरिओम गौतम तथा सारस्वत अतिथि के रूप आमिर फारूखी उपस्थित रहेंगे। पाठक मंच से सम्बद्ध डॉ मंदाकिनी शर्मा, डॉ वन्दना कुशवाहा, डॉ कनक लता वघेल, डॉ अंकिता संगीता खिसानिया, डॉ नेहा आर्य, डॉ रामगोपाल आर्य, सुनीति बैस, रामचरण चिराड़ ÷रुचिर÷ व करूणा सक्सेना आदि ने कार्यक्रम में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

पेंशनर महासंघ ने मध्यप्रदेश के पेंशनरों का केंद्र के समान मंहगाई राहत दिये जाने की मांग

सेवा निवृत अधिकारी कर्मचारी पेंशनर महासंघ

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। जिला ग्वालियर ने मध्यप्रदेश शासन से केंद्र के समान मंहगाई राहत पेंशनरों को दिवाली से पूर्व देने की मांग की है।पेंशनरों के लंवित एरियर का भुगतान नही हुआ है अतह छटे वेतन मान और सातवे वेतन मान की एरियर जो वकाया है,उसका भुगतान दिवाली से पूर्व किया जाए।मांग करने में पेशनर महासंघ के संरक्षक बसंत पुरोहित श्रीराम गोयल,योगेंन्द्र सिंह भदौरिया के सी शर्मा, राम कुमार गुप्ता,राजेंद्र विसारिया,हरीप्रकाश श्रीवास्तव अशोक भटनागर,मुकेश खंडेलवाल एक के गोस्वामी आदि पमुख पदाधिकारी है।

आज गोहद विधानसभा के मौ मंडल में युवा मोर्चा की बैठक संपन्न हुई जल्द ही मौ नगर में होगा युवा सम्मेलन

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ.बेताल सिंह गौड़

आज मौ मंडल में गोहद विधानसभा प्रत्याशी लाल सिंह आर्य के समर्थन में मौ मंडल में कई युवा मोर्चा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता बंधु नरसिंह मंदिर पर उपस्थित होकर सभी कार्यकर्ता मौ मंडल को भारी मतों से विजई बनाकर लाल सिंह आर्य को गोहद का विधायक बनाकर विधानसभा भेजेंगे तथा प्रत्येक पोलिंग बूथ पर मजबूत होकर युवा अपनी ताकत झोंक देंगे और कई विषयों पर चर्चा हुई। युवा शक्ति में एक नया जोश और साहस है प्रत्येक युवा गोहद में कमल खिलाने को तैयार है और जल्द से जल्द मौ नगर में युवा सम्मेलन भारतीय जनता पार्टी द्वारा कराया जायेगा आज की बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में गोहद विधानसभा प्रत्याशी लाल सिंह आर्य जी, पिछड़ा वर्ग मोर्चा जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र गुर्जर जी, जिला उपाध्यक्ष सज्जन यादव जी, मंडल अध्यक्ष गोपाल कुशवाह जी युवा मोर्चा जिला उपाध्यक्ष राम अवतार गुर्जर जी, पूर्व मंडल अध्यक्ष पवैया जी, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष धोरी यादव जी,नगर परिषद उपाध्यक्ष पंकज कुशवाहा जी, रामू कुशवाहा, सोनू खान, अजय झा, धर्मेंद्र राणा , डॉ सुनील गोयल जी सभी मोर्चा के मंडल अध्यक्ष एवं सभी मंडल के कार्यकर्ता बंधु उपस्थित रह

जब कोई दिलेर आएगा तब शराब और गाय, पशु–पक्षी की हत्या बंद हो जाएगी

संत उमाकान्त जी महाराज

उज्जैन (म.प्र.)देश, समाज परिवार के हित में, पूरी व्यवस्था में ही स्थाई सुधार ला देने के अचूक और सरल उपाय बताने वाले, जिन्हें कोई भी व्यक्ति, पार्टी या दल रुपया-पैसा, पद-प्रतिष्ठा आदि का लालच देकर कभी नहीं खरीद सकता, डंके की चोट पर बिना डरे स्पष्ट रूप से सत्य बात कहने वाले, महान समाज सुधारक, पूरे समरथ सन्त सतगुरु, उज्जैन वाले बाबा उमाकान्त जी महाराज ने 15 अक्टूबर 2022 प्रातः पूर्णिया (बिहार) में दिए व अधिकृत यूट्यूब चैनल जयगुरुदेवयूकेएम पर लाइव प्रसारित संदेश में बताया कि यदि कानून बन जाए कि गौ हत्या नहीं होगी, किसी भी जानवर की हत्या कोई नहीं करेगा तब तो यह अभी बंद हो सकता है। लेकिन आपको यह (करने की) पावर नहीं है। लेकिन अगर मांस खाना लोग बंद कर दें तो कोई हत्या होगी? कोई जानवर काटा जाएगा? कोई मुर्गा, भैसा, बकरा काटा जाएगा? नहीं काटा जाएगा। इसलिए यह अभियान तो आप चलाई ही सकते हो। नहीं कुछ है तो आपके घर में ही कोई मांसाहारी हो, उसी को समझा कर सही कर लो। जाति-बिरादरी में, पड़ोसी, मिलने-जुलने वाला है, उसी को सही करो तो आपका शरीर अच्छे काम में लगेगा तो। मनुष्य ही परोपकार, दूसरों की मदद, दूसरों के लिए कुछ कर सकता है बाकी जानवर तो आप-आप ही चरें, वह तो अपने लिए ही करते हैं। तो यह एक परोपकार का काम भी करो कि आप लोगों को शाकाहारी, नशा मुक्त बनाओ।महाराज जी ने 11 अगस्त 2020 प्रातः उज्जैन आश्रम में बताया कि हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि जितने भी पक्ष-विपक्ष के नेता, जो कहलाते हो, आपको मान्यता लोगों ने जो दे रखा है, आपका यह फर्ज बनता है कि आप परिस्थितियों को समझो, गहन अध्ययन करो। अब यह कोई शाकाहारी नशा मुक्त ही कर सकता है। शराब पीने वाला कभी नहीं कर सकता है। नशे का सेवन करने वाला, कहां से इन सब चीजों को सोच पाएगा? मैंने देखा राजस्थान में शाकाहारी लोग ज्यादा है और शाकाहारी को पसंद करते हैं। शाकाहारी एमएलए, एमपी भी आप लोग हो। आप लोग अपना विचार इन नेताओं के सामने रखो। अगर कोई मांसाहारी शराबी है तो भी उनके सामने विचार रखो। अब बहुत हो गया, अब ज्यादा दिन इसको मत खींचो, अब निर्णय ले लो, फायदे का काम कर लो। कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती है कि जो इतना मेहनत, दौड़-धूप किये कि चलो भाई हम सेवा करेंगे, एमएलए बन जाएंगे, वह एमएलएशिप, विधायकी ही खत्म हो जाए, सेवा करने का अवसर ही चला जाए। इसलिए बनाए रखो, आपका समय जब तक है, बनाये रखो। और वहां से निकलने के बाद, सजा काटने के बाद, आप जनता की सेवा में लग जाओ। बंधन क्या होता है? सजा ही एक तरह की होती है। जेल में बंद होना बड़ी सजा होती है। और किसी को दो घंटे कही बैठा देना, वह भी सजा होती है। सजा काट के जब निकलो तो सेवा में लग जाओ।

आज गोहद विधानसभा के मौ मंडल में युवा मोर्चा की बैठक संपन्न हुई जल्द ही मौ नगर में

होगा युवा सम्मेलन

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ.बेताल सिंह गौड़

में मौ मंडल में कई युवा मोर्चा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता बंधु नरसिंह मंदिर पर उपस्थित होकर सभी कार्यकर्ता मौ मंडल को भारी मतों से विजई बनाकर लाल सिंह आर्य को गोहद का विधायक बनाकर विधानसभा भेजेंगे तथा प्रत्येक पोलिंग बूथ पर मजबूत होकर युवा अपनी ताकत झोंक देंगे और कई विषयों पर चर्चा हुई। युवा शक्ति में एक नया जोश और साहस है प्रत्येक युवा गोहद में कमल खिलाने को तैयार है और जल्द से जल्द मौ नगर में युवा सम्मेलन भारतीय जनता पार्टी द्वारा कराया जायेगा आज की बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में गोहद विधानसभा प्रत्याशी लाल सिंह आर्य जी, पिछड़ा वर्ग मोर्चा जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र गुर्जर जी, जिला उपाध्यक्ष सज्जन यादव जी, मंडल अध्यक्ष गोपाल कुशवाह जी युवा मोर्चा जिला उपाध्यक्ष राम अवतार गुर्जर जी, पूर्व मंडल अध्यक्ष पवैया जी, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष धोरी यादव जी,नगर परिषद उपाध्यक्ष पंकज कुशवाहा जी, रामू कुशवाहा, सोनू खान, अजय झा, धर्मेंद्र राणा , डॉ सुनील गोयल जी सभी मोर्चा के मंडल अध्यक्ष एवं सभी मंडल के कार्यकर्ता बंधु उपस्थित रहे

पूरी निष्पक्षता से सम्पन्न कराएं निर्वाचन कार्य - मुख्य कार्यपालन अधिकारी

सेक्टर आफीसर निर्वाचन की हर जानकारी रखें - डॉ सोनवणे

रीवा । कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में सेक्टर आफीसरों का दो पालियों में चुनाव प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत डॉ सौरभ सोनवणे ने कहा कि सेक्टर आफीसर निर्वाचन की महत्वपूर्ण कडी हैं। अपने सेक्टर में उसे पूरे वैधानिक अधिकार प्रदान किए जा रहे हैं। सेक्टर के सभी मतदान केन्द्रों में सुचारू मतदान की व्यवस्था में समन्वय की पूरी जिम्मेदारी सेक्टर आफीसर की होगी। सभी सेक्टर आफीसर पूरी निष्पक्षता से निर्वाचन कार्य सम्पन्न कराएं।

पेंशनर महासंघ ने मध्यप्रदेश के पेंशनरों का केंद्र के समान मंहगाई राहत दिये जाने की मांग

सेवा निवृत अधिकारी कर्मचारी पेंशनर महासंघ

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। जिला ग्वालियर ने मध्यप्रदेश शासन से केंद्र के समान मंहगाई राहत पेंशनरों को दिवाली से पूर्व देने की मांग की है।पेंशनरों के लंवित एरियर का भुगतान नही हुआ है अतह छटे वेतन मान और सातवे वेतन मान की एरियर जो वकाया है,उसका भुगतान दिवाली से पूर्व किया जाए।मांग करने में पेशनर महासंघ के संरक्षक बसंत पुरोहित श्रीराम गोयल,योगेंन्द्र सिंह भदौरिया के सी शर्मा, राम कुमार गुप्ता,राजेंद्र विसारिया,हरीप्रकाश श्रीवास्तव अशोक भटनागर,मुकेश खंडेलवाल एक के गोस्वामी आदि पमुख पदाधिकारी है।

एसपी द्वारा थाना फूप का औचक निरीक्षण कर संवेदनशील मतदान

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । आगामी विधानसभा चुनाव-2023 को दृष्टिगत रखते हुये उक्त चुनाव को निर्विघ्न व निष्पक्ष रुप से सम्पन्न कराने हेतु पुलिस अधीक्षक डॉ. असित यादव के द्वारा थाना फूप का आकस्मिक निरीक्षण कर चुनाव सम्बन्धी तैयारियों का जायजा लिया गया व पुलिस को निर्विघ्न निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न कराने के सम्बन्ध में निर्देशित किया गया।इस दौरान पुलिस अधीक्षक श्री यादव ने थाना प्रभारी फूप निरीक्षक रामनारायण सिंह भदौरिया एवं थानास्टाफ से संवेदनशील मतदान केन्द्रो अपराध और अपराधियों के सम्बन्ध में जानकारी हासिल की तथा थाना मेंमौजूद मालखाना, आर्म्स एम्यूनेशन, बलवा ड्रिल सामग्री एवं टीयर गैस सेल, हवालात, कम्प्यूटर कक्ष चैक किया साथ ही ईनामी वारण्टी,स्थायी वारण्टी, गिरफ्तार वारण्टी फरारी बदमाश रजिस्टर को चैक किया एवं थाना प्रभारी व थाना स्टाफ को चुनाव सम्बन्धी कार्यवाहियों के सम्बन्ध में दिशा निर्देश दिये गये तथा अच्छी कार्यवाही करने वाले पुलिस अधिकारियों को पुरुस्कृत किया गया।इसके पश्चात पुलिस अधीक्षक श्री यादव द्वारा थाना प्रभारी के साथ थाना फूप क्षेत्रांतर्गत संवेदनशील मतदान केन्द्रों का भ्रमण किया गया जिसमें ग्राम भदाकुर,रानी विरगवां,मटगहना के मतदान केन्द्रों पर पहुँच कर, मतदान केन्द्र का निरीक्षण किया गया व ग्रामीणजनों, संरपच पूर्व संरपच से आगामी चुनाव के परिपेक्ष्य में समस्याओं आदि विषयों पर चर्चा की गयी एवं ग्रामीणजनों को भय मुक्त व निर्भीक होकर मतदान करने हेतु प्रेरित किया गया व उन्हें समुचित सुरक्षा का आश्वासन दिया गया साथ ही किसी भी प्रकार के प्रलोभन या दबाव की शिकायत या सूचना तत्काल पुलिस को देने की सलाह दी गई एवं सभी लोगों से आदर्श आचरण संहिता का पालन करने की अपील की गई।

विधानसभा चुनाव को दृष्टिगत रखते हुये एसपी असित यादव ने थाना फूप का औचक निरीक्षण एवं संवेदनशील मतदान केन्द्रो का भ्रमण.

केशब पंडित जी ब्यूरो चम्बल ...

भिण्ड... आगामी विधानसभा चुनाव को दृष्टिगत रखते हुये उक्त चुनाव को निर्विघ्न व निष्पक्ष रुप से सम्पन्न कराने हेतु आज दिनांक 20.10.23 को पुलिस अधीक्षक भिण्ड डॉ0 असित यादव के द्वारा थाना फूप का आकस्मिक निरीक्षण कर चुनाव सम्बन्धी तैयारियों का जायजा लिया गया व पुलिस को निर्विघ्न निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न कराने के सम्बन्ध में निर्देशित किया गया।इस दौरान पुलिस अधीक्षक असित यादव ने थाना प्रभारी फूप निरीक्षक रामनारायण सिंह भदौरिया एवं थाना स्टाफ से संवेदनशील मतदान केन्द्रो, अपराध और अपराधियों के सम्बन्ध में जानकारी हासिल की तथा थाना में मौजूद मालखाना, आर्म्स एम्यूनेशन, बलवा ड्रिल सामग्री एवं टीयर गैस सेल, हवालात, कम्प्यूटर कक्ष चैक किया साथ ही ईनामी वारण्टी, स्थायी वारण्टी, गिर0 वारण्टी, फरारी

बदमाश रजिस्टर को चैक किया एवं थाना प्रभारी व थाना स्टाफ को चुनाव सम्बन्धी कार्यवाहियों के सम्बन्ध में दिशा निर्देश दिये गये तथा अच्छी कार्यवाही करने वाले पुलिस अधिकारियों को पुरुस्कृत किया गया।इसके पश्चात पुलिस अधीक्षक असित यादव के द्वारा थाना प्रभारी के साथ थाना फूप क्षेत्रांतर्गत संवेदनशील मतदान केन्द्रो का भ्रमण किया गया जिसमें ग्राम भदाकुर, रानी विरगवां, मटगहना के मतदान केन्द्रो पर पहुँच कर, मतदान केन्द्र का निरीक्षण किया गया व ग्रामीणजनों, संरपच पूर्व संरपच से आगामी चुनाव के परिपेक्ष्य में समस्याओं आदि विषयों पर चर्चा की गयी एवं ग्रामीणजनों को भय मुक्त व निर्भीक होकर मतदान करने हेतु प्रेरित किया गया व उन्हें समुचित सुरक्षा का आश्वासन दिया गया साथ ही किसी भी प्रकार के प्रलोभन या दबाव की शिकायत या सूचना तत्काल पुलिस को देने की सलाह दी गई एवं सभी लोगो से आदर्श आचरण संहिता का पालन करने की अपील की गई।

मातृशक्ति के प्रति युवाओं का श्रद्धा भाव राष्ट्र के लिए शुभ संकेतः भारत सिंह कुशवाहा

बिल्हैटी के युवाओं ने मां कात्यायनी की विशेष पूजा कर लिया समाज के वरिष्ठ जनों का आशीर्वाद

प्रमोद कुशवाहा की अगुवाई में युवाओं ने ली कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण की शपथ

ग्वालियर सनातन संस्कृति में मातृशक्ति को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त है । नवदुर्गा पूजन इसका प्रमाण है । मुरार विकास खण्ड के ग्राम बिल्हैटी के युवाओं के बीच इस आशय के उद्गार प्रदेश के मंत्री भारत सिंह कुशवाहा ने व्यक्त किए । यहां युवा कुशवाहा टीम के संयोजक प्रमोद कुशवाहा के साथ आए युवाओं ने मां कात्यायनी देवी की विशेष पूजा अर्चना की । मंत्री भारत सिंह ने युवाओं के बीच कहा कि जिस समाज में मातृशक्ति का सम्मान होगा, वह समाज उत्तरोत्तर प्रगति करेगा । पूजा के बीच बिल्हैटी के युवाओं ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ चरणबद्ध मुहिम चलाने का संकल्प लिया । परस्पर समी ने इसमें रचनात्मक सहयोग का भरोसा भी दिलाया । बिल्हैटी कुशवाहा युवा मंडल के संकल्पित युवाओं में संयोजक प्रमोद कुशवाहा के साथ दिलीप कुशवाहा, बृजेश, संजय, रामनरेश, लालू, रायसिंह, कल्लू, अटल बिहारी कुशवाहा, रिंकू, लालसिंह, बालमुकुंद, लोकेन्द्रसिंह, शंकर और नीरज कुशवाहा प्रमुख हैं । भारत सिंह कुशवाहा ने प्रमोद कुशवाहा के प्रयासों की मुक्तकंठ प्रशंसा की ।

गरियाबंद जिला बोरसी गांव के प्रांगण में बजरंग चौक व्यापारी संघ द्वारा दुर्गोंसव पर्व का आयोजन

˝गरियाबंद रिपोर्टर लेखराज चक्रधारीञ्ञ

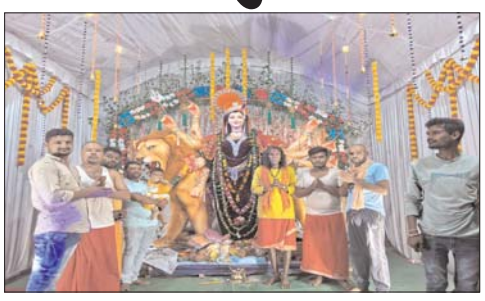

दुर्गा उत्सव के इस पावन पर्व पर ग्राम बोरसी में बजरंग चौक व्यापारी संघ द्वारा मां अंबे की मूर्ति स्थापना अपनी इच्छाओं को अपनी श्रद्धा में परिवर्तित कर मां दुर्गा के प्रति आस्था का भाव संजोया ग्राम वासियों ने मां अंबे में पूर्ण आस्था का भाव गरियाबंद जिला के ग्राम बोसी के बजरंग

चौक व्यापारी संघ के आपसी सहयोग से मां दुर्गा की मूर्ति की स्थापना किया गया जिसमें प्रतिदिन लोगों में एक विशिष्ट श्रद्धा तथा मां अंबे के प्रति उत्साह झलक रहा है बोरसी बजरंग चौक व्यापारी संघ अपने भविष्य की मंगल कामना हेतु तथा मां की शांति के लिए अत्यंत संघर्ष कर मां अंबे को प्रसन्न कर दूर दोस्तों का पर्व अत्यंत शहर के साथ मनाया।

स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन के लिए आदर्श आचरण संहिता का सख्ती से कराएं पालनः श्री अनुपम राजन

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग की निर्वाचन तैयारियों की समीक्षा की

भोपाल। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने गुरुवार को आरसीव्हीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी भोपाल में भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग के अंतर्गत आने वाले 8 जिलों के कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी एवं पुलिस अधीक्षकों के साथ बैठक की। श्री राजन ने मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन 2023 को लेकर जिलों में की जा रही तैयारियों की विस्तार से समीक्षा की। बैठक में उपस्थित दोनों संभागों के कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारियों एवं पुलिस अधीक्षकों ने अपने-अपने जिलों में की जा रही तैयारियों के बारे में पीपीटी के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी। बैठक में पुलिस महानिरीक्षक, कानून व्यवस्था, सुरक्षा मध्यप्रदेश एवं राज्य पुलिस नोडल अधिकारी श्री अनुराग, संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राकेश सिंह व श्रीमती रूचिका चौहान, भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग के आयुक्त डॉक्टर पवन कुमार शर्मा, दोनों संभागों के पुलिस रेंज के आईजी, डीआईजी सहित भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, नर्मदापुरम, बैतूल एवं हरदा जिले के कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी तथा पुलिस अधीक्षक उपस्थित थे।

श्री राजन ने कहा कि दोनों संभागों के सभी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में आपराधिक प्रवृत्ति एवं असामाजिक तत्वों के खिलाफ एनएसए एवं जिला बदर सहित अन्य प्रतिबंधात्मक धाराओं में सख्त कार्रवाई करें। मतदान प्रतिशत ब?ाने व मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक करने के लिए सभी जिले मतदाता जागरूकता की गतिविधियों में तेजी लाएं। अंतर्राज्यीय एवं अंतर जिला नाकों पर 24 घंटे विशेष निगरानी रखें। अवैध धन, मदिरा, अवैध हथियार एवं अन्य मादक पदार्थ सहित अन्य आपत्तिजनक सामग्री के परिवहन पर अंकुश लगाए और अभियान चलाकर ऐसी सामग्री जब्त करें। एसएसटी, एफएसटी एवं वीएसटी दलों को पूरी तरह मुस्तैद एवं सतर्क होकर काम करने के लिए आदेशित करें। श्री राजन ने वल्नरेबल क्षेत्र के मतदान केन्द्रो में सुरक्षा के अतिरिक्त इंतजाम करने के निर्देश दिए। संवेदनशील मतदान केन्द्रों की वेबकास्टिंग (लाइव-स्ट्रीमिंग) की पुख्ता व्यवस्थायें करें। श्री राजन ने जिलों में स्थापित मतदाता हेल्प डेस्क नंबर 1950 का संचालन पूरी सक्रियता एवं गंभीरता से कराने के निर्देश दिए। श्री राजन ने कहा कि हेल्पडेस्क पर मतदाताओं की ओर से आने वाली हर कॉल अटेंड किया जाए और उसकी समस्या का समुचित समाधान किया जाए। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत नागरिक सी-विजिल एप के माध्यम से करें इसके लिए अधिक से अधिक प्रचार प्रसार किया जाए। श्री राजन ने कहा कि 80 वर्ष से अधिक आयु के ऐसे बुजुर्ग जो घर से ही मतदान करना चाहते हैं उनसे फॉर्म-12 डी भरवाकर सहमति लें। इसी तरह 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता वाले दिव्यांग मतदाताओं को घर से मतदान करने की सुविधा मुहैया कराई जाना है। जिन मतदान केन्द्रों में 1550 से अधिक मतदाता हैं वहाँ के मतदाताओं को सुविधाजनक तरीके से वोट डालने की सुविधा प्रदान करने के लिये मुख्य मतदान केंद्र परिसर में या इसके समीप ही सहायक मतदान केन्द्र बनाये जायेंगे, उसका प्रस्ताव भी जल्द से जल्द कराएं। इसके साथ ही मतगणना स्थल का प्रस्ताव भी भेजें।

सिंधी पंचायत का फैसला बोर्ड करेगा विवादों का निपटारा

भोपाल। बैरागढ़ में सिंधी समाज की सबसे बड़ी संस्था पूज्य सिंधी पंचायत ने सामाजिक मसलों का निराकरण आपसी सहमति से करने के लिए लंबे समय बाद फैसला बोर्ड गठित किया है। यह बोर्ड मृत्युभोज बंद करने एवं मांगलिक आयोजन में फिजूलखर्ची रोकने का प्रयास करेगा।

पंचायत पदाधिकारियों ने आपसी सहमति से बोर्ड का गठन किया है। बोर्ड का चेयरमैन राज मनवानी को बनाया गया है। बोर्ड में नगर की प्रमुख सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों, कांग्रेस एवं भाजपा के वरिष्ठ नेताओं एवं प्रबुद्धजनों को शामिल किया गया है। पंचायत के महासचिव माधु चांदवानी ने बताया कि फैसला बोर्ड के गठन का मामला लंबे समय से टल रहा था। अब इसके गठन के साथ ही लंबित मामलों का निराकरण भी किया जाएगा। सामाजिक बुराइयां दूर करने के लिए बोर्ड हर माह समीक्षा बैठक करेगा। पंचायत पदाधिकारियों ने तय किया है कि वे काकटेल पार्टियों में शामिल नहीं होंगे। पंचायत ने अपनी स्थापना के समय से अब तक बड़ी संख्या में परिवारों को टूटने से बचाया है। पंचायत पदाधिकारी विवाद की स्थिति में दोनों पक्षों से चर्चा कर आपसी सहमति से निराकरण का प्रयास करते हैं। अब तक करीब पांच हजार परिवारों को अदालत तक पहुंचने के बाद राजी-खुशी से समझौता करने के लिए सहमत किया गया है। कुछ मामलों में तलाक की स्थिति आने से भी रोकी गई है। पंचायत अध्यक्ष साबू रीझवानी का कहना है कि हमारा सामाजिक अभियान निरंतर जारी रहेगा।

भोपाल के हुजूर में फिर रामेश्वर का सामना करेंगे नरेश

भोपाल। मप्र विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने गुरुवार देर रात जारी प्रत्याशियों की दूसरी सूची में भोपाल जिले की बाकी चार सीटों पर भी नाम घोषित कर दिए। तीन सीटों पर कांग्रेस पहले ही प्रत्याशी घोषित कर चुकी थी। ताजा सूची के मुताबिक भोपाल दक्षिण-पश्चिम से पीसी शर्मा के नाम पर पार्टी ने एक बार फिर भरोसा जताया है। वहीं गोविंदपुरा से रवींद्र साहू को मैदान में उतारा है। हुजूर से नरेश ज्ञानचंदानी को पार्टी ने एक बार फिर टिकट दिया है। इसके अलावा भोपाल उत्तर से विधायक आरिफ अकील के उत्तराधिकारी के तौर पर उनके बेटे आतिफ अकील चुनाव मैदान में होंगे।

हुजूर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी नरेश ज्ञानचंदानी ने 2018 में हुए पिछले विधानसभा चुनाव में सिंधी मतदाताओं के दम पर भाजपा प्रत्याशी रामेश्वर शर्मा को अच्छी टक्कर दी थी। कांग्रेस ने उत्तर से नए चेहरे आतिफ अकील को टिकट दिया हैं, हालांकि वो वर्तमान विधायक आरिफ अकील के बेटे हैं। आतिफ विरोध के बाद भी टिकट दिया गया है। आरिफ अकील के भाई आमिर अकील ने आतिफ का विरोध किया था। वहीं गोविंदपुरा विधानसभा क्षेत्र से रवींद्र साहू झूमरवाला को टिकट दिया गया है। इस विधानसभा क्षेत्र से रामबाबू शर्मा, श्रमिक नेता दीपक गुप्ता ने दावेदारी की थी। इधर शहर की दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से विधायक पीसी शर्मा को फिर से अवसर मिला है। इस विधानसभा क्षेत्र से संजीव सक्सेना ने दावेदारी जताई थी, लेकिन कांग्रेस आलाकमान ने पीसी शर्मा पर ही भरोसा जताया है। पीसी शर्मा का मुकाबला भाजपा के किस नेता से होगा, यह अभी तय नहीं हुआ है, क्योंकि भाजपा ने इस सीट पर उम्मीदवार नहीं उतारा है। बाकी विधानसभा क्षेत्रों से भाजपा व कांग्रेस के उम्मीदवार तय हैं।

एक नजर...

कांग्रेस को पटखनी देने भाजपा ने वेट एंड वॉच का खेला माइड गेम

मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए 17 नवंबर को मतदान है। 21 अक्टूबर से नामांकनअधिसूचना जारी हो जाएगी। इससे पहले कांग्रेस ने 230 में से 229 सीटों पर अपने प्रत्याशियों का एलान कर दिया है। आमला सीट निशा बांगरे के लिए होल्ड कर रखी है। वहीं, अगस्त में पहली सूची जारी करने वाली भाजपा कांग्रेस से प्रत्याशी उतारने में पिछड़ गई है। भाजपा ने अपने 136 ही उम्मीदवार उतारे है। अभी 94 प्रत्याशियों के नाम का एलान होना बाकी है। इसमें 67 विधायक शामिल है। इसके पीछे की वजह भाजपा की एक-एक सीट पर तैयार की गई रणनीति बताई जा रही है। पार्टी ने कांग्रेस को पटखनी देने के लिए प्रत्याशी उतारने में माइंड गेम खेला है। कांग्रेस ने चुनाव की तारीखों के एलान के दो से तीन महीने पहले 66 लगातार हारती आ रही सीटों पर प्रत्याशी उतारने की बात कही थी, लेकिन इसमें भाजपा कांग्रेस से आगे निकल गई। भाजपा ने 17 अगस्त को लगातार हारती हा रही 39 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतार दिए। इसके कुछ दिन बाद लगातार हारती आ रही कुछ और सीटों पर प्रत्याशियों का एलान कर दिया। इससे प्रत्याशियों को चुनाव प्रचार करने दो महीने ज्यादा का समय मिल गया। साथ ही पार्टी को टिकट कटने से विरोध और असंतोष उभरने के डैमेज कंट्रोल करने का भी ज्यादा समय मिल गया। भाजपा ने तीसरी सूची में तीन केंद्रीय मंत्री समेत सात सांसदों को चुनाव मैदान में उतार कर सबको चौंका दिया। इसमें कई सीएम पद के दावेदार भी शामिल है। इससे नाराज कार्यकर्ताओं में उनके क्षेत्र के नेता के सीएम बनने की उम्मीद जगी और वह पार्टी के काम में एक्टिव हो गए। साथ ही यह मैसेज भी गया कि उनके नेता ज्यादा सीटों से जीतेंगे तो वह सीएम बनेंगे। दूसरा पार्टी ने बढ़े नेताओं के चुनाव मैदान में उतार कर सभी क्षेत्र को बैलेंस किया है। भाजपा के अभी 94 प्रत्याशियों के नामों पर घोषणा बाकी है। इसमें 8 मंत्री और 67 विधायकों की सीट पर निर्णय होना है। क मंत्री यशोधरा राजे सिंधिया ने स्वास्थ्य कारणों से चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया है। मध्य प्रदेश को लेकर भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक दो बार टल चुकी हैं। इसके पीछे की वजह कांग्रेस की सूची का इंतजार बताया जा रहा है। पार्टी सूत्रों का कहना है कि पाचवीं सूची में सर्वे रिपोर्ट के अनुसार करीब दो दर्जन विधायकों और चार से पांच मंत्रियों के टिकट खतरे में है। इनके टिकट कटते है तो बड़ी संख्या में बगावत हो सकती है। अब कांग्रेस के प्रत्याशियों के एलान से बगावत और विरोध बड़े स्तर पर नहीं होने का अनुमान है। वहीं, यदि कोई निर्दलीय या किसी तीसरे दल से लड़ता है तो उतना नुकसान नहीं होगा। इससे पार्टी डैमेज कंट्रोल भी कर लेंगी।

एमपी में जेठ-बहू, चाचा-भतीजा, समधी-समधन के बीच सियासी जंग, इन सीटों पर रिश्तेदार आमने-सामने

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए 17 नवंबर को मतदान होगा। इसमें कांग्रेस प्रत्याशियों के एलान में कांग्रेस ने भाजपा पर बढ़त बना ली है। कांग्रेस ने बैतूल जिले की आमला सीट को छोड़कर बाकी 230 में से 229 सीटें घोषित कर दी है। वहीं, भाजपा ने अपनी 136 सीटों की ही घोषणा की है। प्रदेश की कई सीटों पर दोनों के प्रत्याशियों के नाम तय हो गए है। इसमें कई सीट पर रिश्तेदार ही आमने सामने है। सागर में जेठ और बहू, देवतालाब में चाचा-भतीजा, डबरा में समधी और समधन आमने सामने है। सागर विधानसभा में रोचक मुकाबला देखने को मिलेगा। सागर विधानसभा में बहू और जेठ के बीच मुकाबला है। यहां पर कांग्रेस ने निधि सुनील जैन को टिकट दिया है। वहीं, भाजपा ने शैलेंद्र जैन को प्रत्याशी बनाया है। शैलेंद्र जैन रिश्ते में निधि सुनील जैन के जेठ है। पिछले चुनाव में इस सीट पर शैलेंद्र जैन करीब 17 हजार वोटों से जीते थे। उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी नेवी जैन को हराया था। देवतालाब विधानसभा सीट पर भी सियासी लड़ाई रिश्तेदारों के बीच है। यहां पर भाजपा ने विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम को टिकट दिया है। जबकि कांग्रेस ने उनके भतीजे पद्येश गौतम को प्रत्याशी बनाया है। यहां पर लड़ाई चाचा बनाम भतीजे के बीच देखने को मिलेगी। पिछले चुनाव में गिरीश गौतम इस सीट पर एक हजार वोट से जीते थे।

प्रदेश की 229 सीटों पर कांग्रेस के प्रत्याशी तय, बसपा की छटवीं लिस्ट जारी

भोपाल। कांग्रेस की दूसरी सूची जारी होने के साथ ही कई जगह बगावत शुरू हो गई है। टिकट कटने से नाराज दावेदारों ने जावरा, बुरहानपुर, रीवा, सिवनी मालवा, सेमरिया में विरोध प्रदर्शन किया। यहां कांग्रेस कार्यालय के सामने पुतला दहन किया गया। कार्यकर्ताओं के बगावती तेवर से कांग्रेस को चुनाव में नुकसान हो सकता है। वहीं, पार्टी भी डैमेज कंट्रोल में जुट गई हैं। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए बसपा ने अपने 28 प्रत्याशियों की छठी सूची जारी कर दी है। इसमें नरसिंहपुर से रिटायर्ड डीआईजी महेश प्रसाद चौधरी को टिकट दिया है। वहीं, इछावर से हरी प्रसाद सिसोदिया, बड़वाह से त्रिलोक राठौर, उज्जैन दक्षिण से मुकेश परमार, नागदा खाचरौद से सीमा गोकुल गोयल, महेश्वर से सुखराम उपाध्याय, कसरावद से केशरी लाल पिपल्दे, आगर से गंगाराम जोगचंद्र, भोपाल उत्तर से महेंद्र वानखेड़े, हुजूर से रणधीर भोजने को प्रत्याशी बनाया है।

तेंदूखेड़ा से रमा कुशवाह, हरदा से प्रहलाद राठौर, करेरा से शांतीदास फले, नरसिंपहुर से संजय मागर, गाडरवारा से शंकर लाल निनामा, बुरहानपुर से सुनील नायके, गुना से भगवान लाल भण्डारी, मैहर से वीरेंद्र सिंह कुशवाह, दमोह से प्रताप रोहित, बरघाट से किरन मरकाम, बसौदा से चंदा बी, नरेला से मुकेश गौर, भोपाल दक्षिण-पश्चिम से सुरेश उबनारे, सुरखी से सतनाम सिंह दांगी, विदिशा से द्वारिका प्रसाद धाकड़, शमशाबाद से महाराज सिंह, कुरवाई से जानकी प्रसाद और सिरोंज से तोषनी पंथी को प्रत्याशी बनाया है।

आमला से निशा बांगरे हो सकती हैं कांग्रेस की उम्मीदवार–मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने अब तक 230 में से 229 प्रत्याशियों को मैदान में उतार दिया है। बैतूल जिले की आमला सीट पर कांग्रेस ने प्रत्याशी की घोषणा नहीं की है। पार्टी यहां से डिप्टी कलेक्टर निशा बांगरे को प्रत्याशी बना सकती है। बांगरे का इस्तीफा मंजूर नहीं होने से मामला कोर्ट में है। मध्यप्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए कांग्रेस ने अपनी दूसरी सूची का एलान कर दिया है। कांग्रेस की इस सूची में 88 नाम घोषित किए गए हैं। पिछली लिस्ट में तीन नाम बदले गए हैं। 230 में से 229 पर नाम सामने आ गए हैं। आमला सीट पर अब तक निर्णय नहीं हो सका है।

सुप्रिया श्रीनेत ने सरकार पर बोला हमला

भोपाल। कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने शुक्रवार को पीसीसी मुख्यालय में प्रदेश सरकार पर बड़ा हमला बोलते हुए कहा कि मध्य प्रदेश में घोटाले और भ्रष्टाचार करने के लिए प्रदेश सरकार ने कर्ज लिया। इस समय प्रदेश सरकार पर चार लाख करोड़ रुपए का कर्जा है। इसका 20 हजार करोड़ रुपए शिवराज सरकार ब्याज चुकाती है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में एक व्यक्ति के ऊपर 40 हजार रुपए का कर्जा है। एक लाख करोड़ रुपए का कर्जा पिछले दो सालों में लिया गया। जिसके चलते पांच साल में कर्जा भी दोगुना हो गया। उनहोंने कहा कि एक तरफ कर्जा बढ़ता जा रहा है। दूसरी तरफ प्रदेश में आमदनी बढ़ाने, निवेश, रोजगार देने कोई सख्त कदम नहीं उठाएग गए। श्रीनेत ने कहा कि प्रदेश में भ्रष्टाचार बेलगाम है। हमारे पास घोटालों की लिस्ट है। प्रदेश के दो करोड़ युवाओं का भविष्य अंधकार छाया हुआ है। यहां पद खाली पड़े हुए, लेकिन नियुक्तियां नहीं दी जा रही है। प्रदेश में एक भी बड़ा निवेश नहीं आया है। उन्होंने कहा कि पढ़े लिखे लोग बेरोजगार घुम रहे हैं। श्रीनेत ने प्रदेश की शिवराज सरकार पर महंगाई से जनता को राहत दिलाने कोई कदम नहीं उठाने का भी आरोप लगाया। राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा कि कांग्रेस सरकार बनेगी तो जो वादे किए है उनको पूरा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस शासित राज्यों में हमने वादे पूरे किए हैं। कांग्रेस के वादे हैं यह जुमले नहीं हैं।

प्रेशर पॉलिटिक्स में फंसी कांग्रेस, इन सीटों पर बदलने पड़े तीन नाम

भोपाल। विधानसभा चुनाव 2023 के लिए कांग्रेस में प्रेशर पॉलिटिक्स जारी है। पार्टी ने गुरुवार देर रात अपने प्रत्याशियों की दूसरी सूची जारी की है। 88 नाम की इस सूची में दबाव के चलते तीन नाम पहली सूची के बदले गए हैं। इनमें दो सीट ग्वालियर चंबल क्षेत्र तो एक महाकौशल की है। इससे पहले कांग्रेस ने नवरात्रि के प्रथम दिन 144 नामों की अपनी पहली सूची जारी की थी। इसमें दतिया विधानसभा सीट से अवधेश नायक, पिछोर से शैलेंद्र सिंह और गोटेगांव से शेखर चौधरी को टिकट दिया था लेकिन विवाद बढ़ने पर कांग्रेस ने इन तीनों सीटों पर अपने प्रत्याशी बदल दिए हैं। अब दतिया से राजेंद्र भारती, पिछोर से अरविंद लोधी और गोटेगांव से एनपी प्रजापति को टिकट दिया है। कांग्रेस अब तक 230 में से 229 सीटों पर नामों का एलान कर चुकी है सिर्फ एक आमला सीट को होल्ड किया गया है। बताया जा रहा है कि घोषित 229 सीटों में से कुछ सीटों पर अभी विवाद बरकार है। यहां विरोध जारी है और प्रत्याशी बदलने की मांग उठाई जा रही है।

कांग्रेस में बगावत तेज, नाराज कार्यकर्ताओं ने पीसीसी के सामने दिग्विजय सिंह का पुतला फूंका

भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव 2023 के लिए कांग्रेस के 229 उम्मीदवारों का ऐलान हो चुका है। अभी पहली सूची के उम्मीदवारों का विरोध पूरी तरह से थमा भी नहीं था कि अब दूसरी सूची आने पर बगावत के सुर और तेज हो गए हैं। नाराज कार्यकर्ताओं का गुस्सा चरम पर है। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय के सामने ऐसे ही पार्टी वर्कर्स ने आज राज्यसभा सांसद और वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह का पुतला जला दिया। पवई और सेवढ़ा विधानसभा सीट के सैकड़ों नाराज कार्यकर्ता प्रदेश कांग्रेस कार्यालय पहुंचे थे। यहां उन्होंने धरना प्रदर्शन और नारेबाजी कर अपना विरोध जताया। ये सभी पवई विधानसभा सीट से पूर्व मंत्री मुकेश नायक और सेवड़ा सीट से घनश्याम सिंह को टिकट दिए जाने का विरोध कर रहे थे। इनका कहना था कि अगर पार्टी ने इन दिनों सीटों पर प्रत्याशी नहीं बदले तो कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ेगा। साथ ही उन्होंने दिग्विजय सिंह पर अपने नेता दामोदर का टिकट कटवाने का आरोप भी लगाया।

कांग्रेस ने दूसरी सूची में जिन सीटों पर प्रत्याशी बदले हैं, वहां पर भी विरोध जताया जा रहा है। पार्टी ने जिन नेताओं का टिकट बदला है, वह अब नाराज हो गए हैं। दतिया से पूर्व प्रत्याशी अवधेश नायक ने पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है उनका कहना है कि वह अब अपने समर्थकों से रायसुमारी कर रहे हैं उसके बाद बड़ा फैसला लेंगे। वहीं गोटेगांव से शेखर चौधरी भी नाम काटे जाने पर नाराज हैं। इसके साथ भोपाल की बैरसिया, हुजूर, दक्षिण पश्चिम, नर्मदापुरम की सुहागपुर सीट पर भी दावेदार नाराज हैं। इधर, श्यामला हिल्स स्तिथ कमलनाथ के बंगले पर नाराज कार्यकर्ताओं ने कपड़े फाड़कर और मुंडन करवाकर अपना विरोध जताया। भोपाल की बैरसिया विधानसभा से टिकट की दावेदारी कर रहे राम भाई मेहर के समर्थक बड़ी संख्या में नाथ के बंगले पर पहुंचे। मेहर को टिकट न दिए जाने पर विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेस ने इस सीट से जयश्री हरीकिरण को प्रत्याशी बनाया है।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478